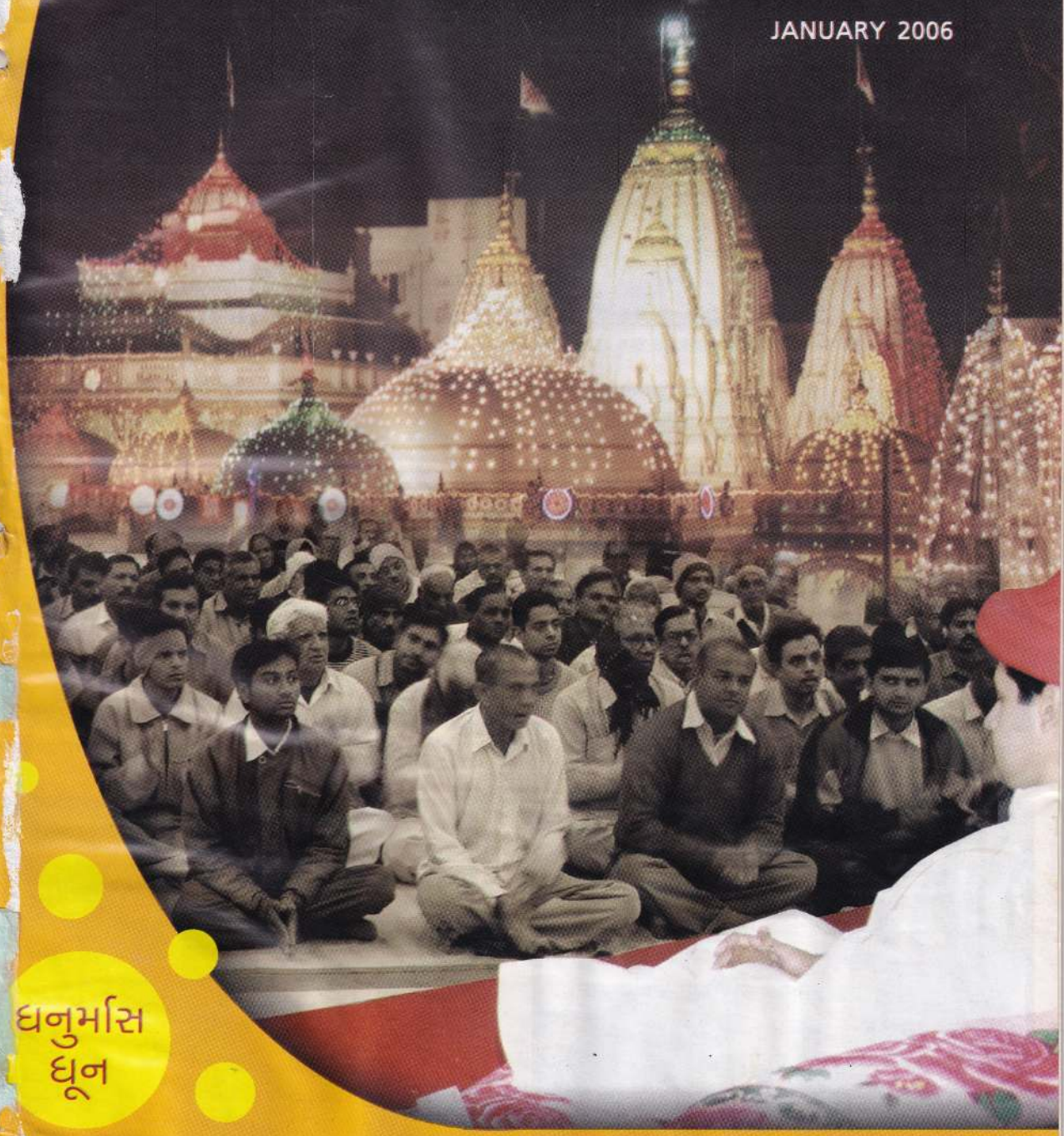
SHREE SWAMINARAYAN
શ્રી સ્વામિનારાયણ

JANUARY 2006



ધનુર્માસિ ધૂન

પ્રકાશક:- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧

Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के सांनिध्यमें तथा
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आश्रय में गढपुर की सांख्ययोगी
मेघना बहन गुरुकानबाई द्वारा आयोजित कथा पारायण के विविध प्रसंग ।



श्रीहरियाग के पूर्णाहुति की पूजा विधि करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



कथाश्रवण करते हुए श्रीहरि के दोनो अपर स्वस्स ।



यजमान परिवार के चि. दीप प.पू. लालजी महाराजश्री का आशीर्वाद प्राप्त करते हुए ।



कथाश्रवण करती हुई देश-विदेश के मंदिरो की सांख्ययोगी बहने ।





यजमान परिवार मावजीभाई, अरविंदभाई, विश्रामभाई तथा वीरचंदभाई एवं बहने पोथीयात्रा में ।

श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान का मुखपत्र

SHREE SWAMINARAYAN

श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ५ जनवरी -२००६



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४१९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

पत्तेमे परिवर्तन के लीये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	सद्विद्या	४
४.	जीवन में वसन्त लाने वाली शीक्षापत्री	६
५.	मूर्ति में मूर्तिमंत्र भाव	७
६.	एक जादू	९
७.	जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि	१०
८.	वासना	११
९.	सच्चा अमृत	१२
१०.	श्रवण भक्ति	१३
११.	वचनामृत ग.प्र. ५	१५
१२.	सत्संग सुरभि : आपके साथी हम है	१६
१३.	सत्संग बालवाटिका (१) देखना चोरी न हो (२) सोना मोहर चाहिए	१७
१४.	प्रश्नपेटी	१९
१५.	समाचार वृत्तांत	२०

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : sntemple@hotmail.com
www.swaminarayanmuseum.com / org

अस्मदीयम्

तन्त्रीश्री की तरफ से.....

पवित्र धनुर्मास में भगवान के मंदिर में ब्राह्ममुहूर्त का दृश्य अत्यन्त आनन्ददायक होता है । भगवान का भक्त तन मन के आलस्य को छोड़कर जीवात्मा के नये उत्साह के साथ भगवान के मंदिर में परमात्मा को प्रसन्न करने के लिए आता हैं । प्रथम भगवान को प्रणाम-प्रार्थना तथा षडाक्षरी महामंत्र की धुनि करते हैं । उस समय साक्षात् परब्रह्म नारायणभी पामर तथा अज्ञानी जीव को हृदय से आशीर्वाद देते हैं ।

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के दरबार में हृदय के दिव्यानन्द के साथ धनुर्मास के उत्सव को आज तक किसी ने छोडा नहीं है । साक्षात् बिराजमान तपस्वी भगवान श्री नरनारायणदेव ऋषि की मंगला तथा श्रृंगार आरती का दर्शन सर्वोपरि श्रीहरि के वशंज प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल का दर्शन तथा विशाल संख्या में भजन करते हुए संत भक्तों का दर्शन करके तथा "स्वामिनारायण" महामंत्र की धुनि से सारावातावरण ब्रह्ममय होजाता है । ऐसी दिव्यता ब्रह्मांड में कही नहीं है ।

सर्वोपरि महामंत्र का शास्त्रो में कितना अधिक वर्णन है -

जे स्वामिनारायण नाम लेशे, तेना बधापातक बाणी देशे ।
सुखी करे संकट सर्व कापे, अंते वणी अक्षरधाम आपे ।
आ मंत्रथी भूत पिशाच भागे, आ मंत्रथी तो सद्बुद्धि जागे ।
आ मंत्र जेना मुखथी जपाय, तेना थकी तो जम नासी जाय ।

स्वामिनाराण मंत्र के जपसे भयंकर जहरीले नाग का जहर उतर जाता है, इसका उदाहरण सत्संग मे मौजूद है - प्रेमानंद स्वामी ने लिखा है -

भव ब्रह्मा मुनि मुक्तजपे आ मंत्रने,
ते सहु पाम्या मनवांछित सुख साज जो ।
प्रेमानंद कर जोडी कहे सहुजन ने,
भूलशो मां अवसर आव्यो छे आज जो ।
स्वामिनारायण आज प्रगट महामंत्र छे ॥

सभी भक्त गाँव-गाँव में शहर शहर में मंदिर मंदिर में स्त्री-पुरुष भजन तो करते ही हैं, लेकिन विशेष भजन करके इस अंतिम जन्म को सफल बनाने के लिए भगवान को प्रसन्न कर लेना । यही करने योग्य है ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
- शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

दिसम्बर-२००५

३. श्री स्वामिनारायण मंदरि बोरणा (ता. लींबडी-मूली देश) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण । वहीं से भचाउ (कच्छ) पदार्पण (३-४)

५. श्री स्वामिनारायण मंदिर अचरडा (ता. लींबडी भवडी-मूलीदेश) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।
प.भ. रमणभाई बबलदास गज्जर के यहाँ पदार्पण, बारडोलपुरा ।
प.भ. किरीटकुमार हरिजीवनदास सोनी के यहाँ पदार्पण (लग्न प्रसंगे पर आशीर्वाद देने हेतु) सेटेलाईट ।

५. प.भ. चेतनभाई पटेल के यहाँ वास्तु प्रसंग पर पदार्पण, साबरमती ।
प.भ. चिमनभाई बबलदास के यहाँ लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण, मेमनगर ।
प.भ. हरिकृष्ण घनश्यामभाई के यहाँ लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण, हांसोल ।

७. श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर वडु पाटोत्सव तथा श्री हनुमानजी महाराज के प्रतिष्ठा महोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

९. से १२. सर्वोपरि छपैयाधाम श्री स्वामिनारायण मंदिर में परायण प्रसंग पर पदार्पण ।

१३. प.भ. भक्तिभाई वी. पटेल के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, राणीप ।
डॉ. भाविन रमेचंद्र परीख के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, मणीनगर ।
प.भ. जगदीशभाई केशवलाल पटेल के यहाँ पदार्पण, राणीप ।

१४. श्री स्वामिनारायण नूतन मंदिर मणीयोर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण, इडर देश ।
प.भ. नटवरभाई सोमाभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, शीलज ।

१६. डॉ. अतुल के. पटेल (धारासभ्यश्री कलोल) के यहाँ लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण, राजपथक्लब, एस.जी. रोड ।

१७. प.भ. सोमनाथ जानी के यहाँ पदार्पण, चांदलोडीया ।

१८. श्री स्वामिनारायण मंदिर धमासणा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

१९. प.भ. रेवाभाई रणछोडदास पटेल के यहाँ गवाडा गाँव में कथा पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

२० से ६ जनवरी-२००६ "विदेश धर्मप्रवास" श्री स्वामिनारायण मंदिर लोस एंजलस में पाटोत्सव तथा (केलीफोर्निया) सत्संग युवा शिबिर तथा यु.एस. के I.S.S.O. चेप्टरो में सत्संग प्रचारार्थ विचरण ।

सत्संगी मात्र को दान भेंट नियमित भरने के संदर्भ में

सर्वावतारी इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानने सप्रदाय को अमूल्य ग्रन्थ शिक्षापत्री श्लो. १४७ के अनुसार आज्ञा की है कि प्रत्येक आश्रित जन अपने आवक का दशवां भाग या जो कमजोर हों वे हरिभक्त वीसवांभाग दान भेंट निकाल कर अपने जीवन का व्यवहार करें । जो हरिभक्त जिस देश में रहते हों वे उसी देश के मंदिर में दान भेंट को देकर रसीद प्राप्त करले, इसके साथ अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य का नाम लिखा कर भेंट के साथ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद की कोठार ओफिस में भर कर पहुंच अवश्य प्राप्त करले ।

विशेष सूचना : श्रीजी महाराज की आज्ञा अनुसार प्रत्येक हरिभक्त दान भेंट की धनराशी अन्यत्र किसी भी संस्था में न दे, इसका ध्यान रखें ।

सद्विद्या

- साधु घनश्यामप्रकाशदासजी
(महंतश्री नारायणघाट)

विद्या अर्थात् - बुद्धि, विद्या अर्थात् जानना, विद्या अर्थात् ज्ञान, विद्या अर्थात् गलत सही का निर्णय। विश्व के सभी प्राणी जन्म के समय से ही मित्र शत्रु, आहार इत्यादि को पहचानने लगते हैं। जीव जन्तु, पशु पक्षी सभी प्राणी में विचारशक्ति का अभाव होता है, लेकिन मनुष्य पुरुषार्थ करके विकास करता गया, विकास केवल विद्या के आधार पर हुआ है।

विद्या को दो भाग में बांटा जा सकता है। सद् विद्या तथा अविद्या ! सारी विद्या, सुविचार सभी को सुखी करता है। तथा अविद्या गलत मार्ग पर लेजाकर दु:खी बनाती है।

संस्कृत में सुभाषित है -

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्चसखात्वमेव त्वमे विद्या
द्रविणं त्वमेव।
त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

हिन्दू संस्कृति में यह विद्या वाल्यकाल से ही सिखाई जाती है। नित्यपूजा, नित्य दर्शन, नित्यगान। हे भगवान आप ही मेरे माता पिता है। मेरे विद्या भी आप ही है। आप ही मेरे धन है। भगवान और संत को पहचानना ही सच्ची विद्या है। सद्विद्या है।

भगवान स्वामिनारायण वचनामृत ग.म. ९वें में कहते हैं कि भगवान के स्वरूप का द्रोह नही होना चाहिए। इसलिए अपने सामने जो प्रत्यक्ष भगवान मिले हैं उसी स्वरूप को दिव्य साकार मानकर अवतारो का अवतारी मानकर सेवा करनी चाहिए। जो ऐसा नहीं जानता और निराकार मानता है। या अन्य अवतार जैसा मानता हैं वह द्रोह किया है ऐसा जानना चाहिए। जैसे अर्जुन को भगवत् स्वरूप का बल था। अर्थात् - भगवान के यथार्थ रूप से पहचान लिया था। ऐसी उस की सच्ची विद्या थी। युधिष्ठिर राजा को शास्त्र वचन का बल था। इसीलिए महाभारत की लडाई में कोई पाप नहीं किये तो भी वे जानते थे कि मेरा किसी काल में कल्याण नहीं होगा। बाद में श्रीकृष्ण भगवान भीष्म पितामह के पास लेजाकर शास्त्र सम्बन्धीज्ञान सुनवाया तो भी अर्जुन जैसे नि:संशय नहीं हुए। इसी वचनामृत में हमारे श्रीहरि भगवान ही मेरी सद्विद्या हैं। ऐसा ज्ञान मार्ग समझना चाहिए। भगवान का बल रखना हैं तभी कल्याण संभव। ऐसा सर्वोपरि भगवान का स्वरूप प्राप्त हुआ है ऐसा जानते हुए कदाचित् सत्संग में से निकल जाय तो भी भगवान की मूर्ति में से प्रेम कम नहीं होता। वह सत्संग से देहछोडकर अक्षरधाम में ही जायेगा।

भगवान स्वामिनारायण ने वचनामृत ग.म. के ६०वे में सद्विद्या विषय की चर्चा की है। श्रीजी महाराज स्वयं संतो से प्रश्न पूछे "जिस की कुशाग्र बुद्धि हो उसे ब्रह्म की प्राप्ति होती है या नहीं ? शास्त्र का ज्ञाता हो तो क्या उसका मोक्ष होता है या नहीं ? मुनि लोग इसका सही उत्तर नहीं देसके। तब श्रीजी महाराज स्वयं उत्तर दिये - कितने लोग व्यवहार में अतिकुशल होते हैं फिर भी आत्मकल्याण के लिए कुछ नहीं करते, कितने तो महान शास्त्रज्ञ होते हुए भी आत्म कल्याण के लिए नहीं सोचते हैं। इसलिए इन्हें कुशाग्र बुद्धिवाला नहीं समझना। इन्हे मोटी बुद्धिवाला समझना चाहिए। जो आत्मकल्याण के लिए सोचे वह भले थोडी बुद्धिवाला हो पर वह कुशाग्र बुद्धि है। इस पर भगवद् गीता कहती है :

या निशासर्वभूतानां तस्यां जागर्ति
संयमी।
तस्यां जागर्ति भूतानि सा निशा
पश्यतो मुने ॥

इस श्लोक का यह अर्थ है - जो रात्रि सभी प्राणियों के सोने की होती है उसमें संयमी जागता रहता है। उसी रात्रि में प्राणी जागते रहते हैं, अर्थात् - लौकिक व्यवहार में अपना जीवन व्यतीत करते हैं, लेकिन मुनि लोग उस रात्रि में परमतत्वका दर्शन करते रहते हैं, उनकी चेतना जगती रहती है सदैव परमात्मतत्व के चिन्तन में लगे रहते हैं। वेही कुशाग्र बुद्धि हैं। जो इस तरह का वर्तन नहीं करते वे मूर्ख है।

हम जानते हैं कि महाभारत का दुर्योधन ऐसा कहता था कि मैं जो जानता हूँ वह ठीक नहीं तथापि करता था, तो ऐसी जानकारी से क्या प्रयोजन ? जहर को जहर मानकर भूख लगने पर खालिया तो ऐसे ज्ञान की क्या आवश्यकता। महाभारत के भीष्म

पितामह महान भक्त जाने जाते हैं, ज्ञान की इनके प्रशंसा होती है । बहुत सारी इनकी पुस्तकें लिखी गयी हैं । लेकिन यह कहा जासकता है वे पक्ष तो गलत का ही लिये थे । अंग्रेज तत्वचिन्तक हेनरी वोन डाईके लिखता है । No, doctrine however high however true can make happy until it has been translated into heart अर्थात् जबतक जीवन में आचरण न हो तब तक मनुष्य कितना ही उत्कृष्ट हो लेकिन सुखी नहीं हो सकता है ।

पुस्तक का वांचन करके घोडसवारी सीखी जा सकती है - क्या ? घोडे पर बैठना ही पडेगा । दुनिया की ६ अरब की संख्या बालो ने चलना सीखा । गिरा तो अवश्य होगा । इसलिए अनुभववाला ज्ञान ही सच्चा ज्ञान है । एक विदेशी लेखक भी टेग्यु कहता है "Book knowledge is mere nuisance. It may do for an ornament but never for a foundation" पुस्तकीय ज्ञान तो उपद्रव कारक है । यह आभूषण के स्म में चल सकता है लेकिन आधार के स्म में कमी हैं । अपने भारत में तक्षशिला विद्यालय में १५० प्रकार की विद्या शिखाई जाती थी । रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र, आयुर्वेद, होमीयोपैथी, भूगोल, खगोल, अवकाश विज्ञान, ज्योतिष शास्त्र, गणित इत्यादि । सद्गुरुब्रह्मानंद स्वमी २४ विद्या के ज्ञाता थे । मुक्तानंद स्वमी भी कवि थे । दश हजार कीर्तन लिखे थे । संगीतकार भी थे, नृत्यकार, चित्रकार, नाडी के जानकर अर्थात् डॉक्टर थे । श्रीजी महाराज स्वयं कईबार मुक्तानंद स्वामी को अपनी नाडी दिखाते थे । कारियाणी के दशवें वचनामृत में यह वात है । मुक्तानंद स्वामी नख में अर्थात् पग के अंगूठे में चाक लगाकर नृत्यु क रते, गाते और चित्र भी बनाते थे । एक ही साथ इतनी सारी क्रिया करने वाले को क्या कहाजाय, इस प्रकार वे विद्या वाचस्पति थे । शास्त्रार्थ महारथी थे । वडोदरा में गायकवाड सरकारकी उपस्थिति में काशी के पंडितो के साथ मुक्तानंद स्वामी ने संस्कृत में शास्त्रार्थ करके भगवान स्वामिनारायण ही प्रगट ब्रह्म है, भगवान है यह सिद्ध किया था । स्वामिनारायण सम्प्रदाय वैदिक सम्प्रदाय है यह सिद्ध किया था । अपने ५०० परमहंस इस प्रकार के सभी विद्वान थे । उस में स.गु. गुणातीतानंद स्वामी कहते तीन स्टेट के दीवान । सिंधिया, होलकर, तथा गायकवाड ये तीन स्टेट मूर्ख) तथा नाथ भक्त बुद्धिशाली क्योंकी दीवानजी केवल व्यवहार में बुद्धि लगाते लेकिन मृत्यु के बाद पर कोई विचार नहीं करते, वे भगवान स्वामिनारायण को पहचान नहीं सके । नाथ भक्त केवल शाक-बकालु का धंधा करते, लेकिन भगवान को पहचान गये थे, जिस से सम्पूर्ण समय भजन में विताते थे । इसी लिए गुणातीतानंद स्वामी ने कहा जो लोग ऊँची इमारत बनाते है, बंगला बनाते है, खूब दौडधाम करते हैं, जब मौत आती है तब डॉक्टर, ज्योतिषी कोई बचा नही पाता । और चुपके से मौत आती है लेजाती है । दीवानजी से स्वामी ने कहा "जगत का चिन्तन ही अज्ञान है । अविद्या है । भगवान के धाम में नित्य रहना हो तो भगवान की भजन करो, कथावार्ता करो । अन्यथा गर्भवास तथा चौरासी लाख की योनियों में अनंतबार आना जाना ही रहेगा । अपने सम्प्रदाय के संत गौरव हैं ।

सारंगपुर में एक बार एक डोशी मां अपने बेटे को बता रही थी स्वामिनारायण बोल । उसी समय श्रीजी महाराज उस गाँव से निकल रहे थे, श्रीजी महाराज ने पूछा यह क्या कर रही हो, तो वृद्धा माता ने कहा इसे स्वामिनारायण नाम आजाय तो यहचारो वेद पढ लिया । ऐसा सार भगवान का नाम है । यही सद्विद्या है ।

जो स्वामिनारायण का नाम ले उसके सभी पाप अपने आप जल जायेंगे । षडक्षरी मंत्र महासमर्थ, जिससे होगा सभी अर्थ सिद्ध । सुखी करे संकट सर्व कार्य, अंते वणी अक्षरधाम आये । षडक्षरी षड्शास्त्रसार, ते तो उतारे भवसिंधुपार । आ मंत्र थी भूत पिशाच भागे, ते मंत्र थी सद्बुद्धि जागे ।

दुनिया के प्रत्येक हिन्दू भागवत के अजामिल को अत्यन्त पापी के स्म में जानते हैं । उसके बेटे का नाम नारायण संतो ने रखवाया था । अंत समय में अपने बेटे का नाम नारायण - नारायण ऐसा लिया और मुक्त हो गया । वालियो

अनुसंधान पृष्ठ नंबर ८

जीवन में वसन्त लाने वाली शीक्षापत्री

- चौधरी रमणभाई भीखाभाई (ईश्वरपुरा)

ऋतुराज वसंत के स्पर्श मात्र से निसर्ग खिल उठता है । वसंत गर्मी-ढन्डी सेतु है ।

माध पंचमी अर्थात् वसंत पंचमी । आज से १७५ वर्ष पूर्व संवत् १८८५ इ.स. १८२६ को वसंत पंचमी के दिन श्री सहजानंद स्वामीने वडताल गाँव में ४५ वर्ष की अवस्था में शिक्षापत्री लिखी । इस रचना के माध्यम से सभी जीवमात्र का कल्याण करना ही जिसका मुख्य लक्ष्य था ।

शिक्षापत्री में भरा हुआ आध्यात्मिकता का सौन्दर्य अलौकिक है । गीताजीके तीसरे हिंसे से भी कम शिक्षापत्री स्वामिनारायण संप्रदाय में श्रुति नहि किन्तु स्मृति मानी जाती है। आत्मविद्या का गहन सत्य शिक्षापत्री द्वारा व्यक्त होता है । किसी भी संप्रदाय का मूल्य उसके साहित्य से आंका जाता है । शिक्षापत्री द्वारा श्रीहरि ने मानवजीवन को धन्य बनाकर सुगन्ध से भर दिया है । इसके अनुसार जीवन जीने वाला संसार सागर से पार हो जाता है ।

सर्व धर्म समभाव की भावना सव में रहे इस हेतु से श्रीजी महाराज ने खूब परीश्रम किया है । आज अपनी अशांति सारे देशमें खून खराबी सर्व धर्म समभाव के अभाव के कारण ही दृष्ट होती है । दूसरे संप्रदाय के मंदिर तथा शिवालय या देवालय आवे तो उसे आदर पूर्वक बंदन करके आगेजाने की आज्ञा किये हैं । जगत के महान शास्त्रों को तथा आध्यात्मिकता को बड़ी सरलता से समझाया है ।

कन्हैयालाल मुन्शी कहते है कि एक समय शैवधर्म तथा जैन धर्म के बीच का मत भेद भी इस सम्प्रदाय ने मिटाया । श्रीहरिने सम्प्रदायो के बीच विसंवादिता रखने के लिए अमूल्य प्रयास किया । गरीबों के प्रति सहजानंद स्वामी का अतिदायलु भाव शिक्षापत्री के ६७ वें श्लोक से स्पष्ट होता है ।

अन्नवस्त्रादिभिः सर्वे स्वकीयाः
परिचारकाः ।
सम्भावनीयाः सततं यथायोग्यं
यथाधनम् ॥

अर्थात् अपने सेवक की अन्नवस्त्रादिक द्वारा यथायोग्य व्यवस्था करनी चाहिए । घर में काम करने के लिए मजूर को जितने में रखा गया हो उससे कम नहीं देना चाहिए ऐसी आज्ञा की । औद्योगिक श्रम करने वाले मजदूर का ख्याल करके, सामाजिक समस्या का ध्यान रखकर, अमीर-गरीब वर्ग-वर्ण भेद को दूर करने के लिए शिक्षापत्री में श्रीहरिने इस श्लोक में आज्ञा की, कम से कम सत्संगीलोग इस आज्ञा का पालन करे तो भी श्रमकार्य करने वाले को न्याय मिल सके । मजूरों का शोषण करने वाले विश्वभर में धनिक लोगों के लिए एक समदिशा का मार्गदर्शन किया जिससे लोग होने वाले अन्याय के प्रति जागस्क होकर न्याय कर सकें ।

जगत के प्रत्येक जीवों की चिन्ता श्री सहजानंद स्वामी ने किया । अहिंसा तथा सदाचार करने के लिए सभी को आज्ञा की अति सूक्ष्म खटमल, जू कीं हींसा तथा यज्ञ में पशु हिंसा का विरोध किया । यज्ञ से बची मांस का भक्षण भी निषेध किया । पशुओं के लिए घास चारा की व्यवस्था पशुपालक पूर्ण करें ऐसी भी आज्ञा की । श्रीहरि की दयादृष्टि स्पष्ट ख्याल कराती है । समाज में अग्रेसर रहनेवाले उद्योगपतियों को हास्पिटल बनाने की आज्ञा १३२ वें श्लोक में की है। स्वयं जो विद्या पढी हो वही पढाने की आज्ञा की है । श्रीजी महाराज ३५ वें श्लोक में जो आज्ञा की है उसका पालन श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय विश्वभर में कर रहा है ।

इस मानव जीवन में पंचविषय की घाव को भरने का कार्य शिक्षापत्री करती है । तम्बाकू, गांजा, मांस, मदिरा व्यभिचार, चोरी जूआ इत्यादि का निषेध किया है । श्रीहरि के नन्द कोटी के सन्तवर्य शतानंद स्वामीने शिक्षापत्री के ऊपर अर्थ दीपिका टीका लिखी जिसमें श्रीहरिके सभी अभिप्रायों का विश्लेषण किया गया है । शिक्षापत्री के अनुसार वर्तन करने वाले चारो पुस्त्रार्थ को प्राप्त करते हैं । भविष्य में करेंगे ऐसी सहजानंद स्वामीने शुभाशीष दिया है ।

मूर्ति में मूर्तिमंत्र भाव

- साधु धर्मकिशोरदास गुरु नारायणस्वरुपदास (प्रयागराज)

भारतीय शास्त्रों में लिखा हुआ है कि मोक्ष की चाहना वाले प्रगट ब्रह्म की उपासना करें। उपासना के विषय में दो भेद बताया गया है परोक्ष तथा प्रगट। परोक्ष अर्थात् मूर्ति को धातु या चित्र की मानकर सेवा पूजा करना। प्रगट अर्थात् भगवान की धातु की या अन्य प्रकार की मूर्ति शास्त्रों में बताई गयी हैं -

शैली दारुमयी लौही, लेप्या लेख्या च सैकती।
मनोमयी मणिमयी प्रतिमाष्टविधाः स्मृता ॥

इन आठ मूर्तियों में मूर्तिभाव न रखकर मूर्तिमंत भावरखना। उसे ही प्रगट भाव कहा गया है। परोक्षभाव से शिस्त तथा विवेक भाव नहीं रह पाता, जबकि प्रगट भाव में दोनो बना रहता है परोक्ष भाव में जन्म जन्मान्तर तक भजन भक्ति करने पर मोक्ष भागी बनते हैं - मुक्तानद स्वामी ने प्रभातिया में लिखा है।

परोक्ष थी भव तारो पार आवे नहि,
वेद वेदान्त कहे सत्यवाणी प्रीति।
प्रगट ने भजी भजी पार पाम्या घणा
गीध गुणी काकयी वृंद कोटी
वृजतणी नारी व्यभिचार भावे तरी
प्रगट उपासना सौथी मोटी..... प्रीति

इस मुक्तानंद स्वामीके पदसे स्पष्ट कहा जा सकता है। कि परोक्ष भाव तथा प्रगट भाव में आकाश पाताल का अन्तर है। रामायण के जटायु के पात्र से समझा जा सकता है कि प्रगट ब्रह्म से मोक्ष प्राप्ति सरल है। जटायु पक्षियों में अधम गीध जाती काथा जिसका आहार भी मांस था। जिसने कोई तपश्चर्या भी नहीं की थी। फिर भी सीता की पहचान रखा और प्रगट ब्रह्म श्रीराम मे परमात्मा का भाव रखा परिणामतः जो जन्म-जन्मतक ऋषिलोग स्थिति नहीं पाते वह जटायु को मिल सकी - गो स्वामी तुलसीदासने लिखा है। -

गीध अधण खग आमीश भोगी।
गति दीन्ही जो जाचत योगी ॥

योगियो को भी दुर्लभ ऐसी गति जटायु को मिली। भागवत में देखे तो गोपियाँ भगवान श्रीकृष्ण में मनुष्यभाव नहीं रखी बल्कि परमात्मा भाव रखीं जिससे उद्धवजीको कहना पड़ा -

अहो भाग्यंमहो भाग्यम् नन्द गोप
व्रजौकसाम्।
यन्मित्रं परमानन्दं पूर्णं ब्रह्म
सनातनम् ॥

इसप्रकार गोपियों की साधना ऋषियों जैसी नहीं थी फिर भी भगवान में भगवान का भाव था जिससे मोक्ष की अधिकारी बन गयीं। इस प्रकार भगवान किसी भी पशुपक्षीमें अवतार धारण करें तो भी उसमें भगवान का भाव रखाजाय तो बड़ी सरलता से मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। मूर्ति में साक्षात् भगवान है ऐसी भावना रखनी चाहिए। क्योंकि मूर्ति धातु की, पाषाण की, या चित्र प्रतिमा की सम्प्रदाय के पूज्य आचार्य महाराज प्राण प्रतिष्ठा करें तो उस मूर्ति में भगवान प्रगट विराजते है, भक्त की भावना पर उसे फल भी देते हैं। इस पर से गढपुर की बनी घटना का विचार करें तो ख्याल आयेगा।

भगवान स्वामिनारायण को एकबार विचार आया की अभी संत तथा हरिभक्त मेरा पूजन करते हैं, लेकिन मेरी मनुष्य लीला के बाद मेरे मूर्ति स्वरुप की पूजा-अर्चन-दर्शन का लाभ मिलता रहे इसको ध्यान में रखकर सत्संग तथा संप्रदाय के प्रसिद्ध चित्रकार श्री नरायणजीभाई को आज्ञा किये की हमारे सामने बैठकर मेरी मूर्ति तैयार करो। नारायणभाई महाराज की आज्ञा सुनकर बडे प्रसन्न हुए। चित्र के लिए कागज और पेन लेकर महाराज के सामने बैढ गये। मन में महाराज की मूर्ति का ध्यान करके चित्र बनाने लगे मूर्ति थोड़ी तैयार हो गयी, सायंकाल का समय हो गया। अर्थात् जिस कागज पर मूर्ति का चित्र बनाये थे उस कागज को अपनी तकिया के नीचे रखकर आरती पूजा करने लगे। दैनिक कर्म पूरा करके नारायणभाई अपने विछौना पर बैठे। शास्त्र नियमानुसार भगवान का ध्यान चिन्तन-धुनि इत्यादि करके शयन किया जाय तो स्वप्न सृष्टि निर्मल

बने । कईबार मनुष्य स्वप्न में कष्ट का अनुभव करता रहता है । इन स्वप्नो से निवृत्ति के लिए मनुष्य को चाहिए की शयन से पूर्व परमात्मा की भजन-स्मरण करके ही शयन करे । महाराज ने अनपे माध्यम से उपदेश दिया है कि शयन करते समय माला जरूर जपना चाहिए । महाराजभी शयन करते समय माला फेरत थे । जिसे प्रेमानदं स्वामीने अपनी चेष्टा में लिखा है -

उभी राखी फेरे सूता सूता रे,
माला मागी लईने जमणे हाथे रे ।
नित्य फेरवे चित्त दईने भूल नपडे रे,
केदी एक नियम धर्मकुंवरनी रे ॥

इसप्रकार नारायणभाई भी भगवान श्रीहरि की आज्ञा अनुसार अपने नियम की माला करके शयन किये । उसके बाद रात्रि में करीब बारह बजे जैसे कोई व्यक्ति नीचे दब गया हो इस प्रकार कराहने की आवाज आने लगी । नारायणजीभाई यह सुनकर अचानक खडे हो गये । जागकर विचार करने लगे कि यह कराहने की आवाज कहाँ से आ रही है । चारो तरफ देखने के बाद कहीं कोई दिखाई नहीं दिया तो उन्होंने सोचा कि हमें भ्रम हो गया होगा । ऐसा विचार कर पुनः सो गये । पुनः थोडे समय के बाद कराहने की आवाज सुनाई देने लगी । नारायणभाई को एसा लगा कि कोई भूत प्रेत तो नहीं है । पुनः विचार आयाकि जहाँ महाराज तथा संत हो वहाँ ऐसे तत्व आ नहीं सकते हैं । ऐसा विचार कर पुनः सो गये । फिर से वही आवाज पीडादायक इस प्रकार सम्पूर्ण रात्रि कराहने की आवाज सुनते रहे । प्रातः होने पर स्नान आदि क्रिया करके महाराज का दर्शन करने गये । दर्शन करके सामने बैठे तो महाराजने पूछा क्यों नारायणभाई तबियत अच्छी नहीं है क्या ? नारायणभाईने कहा ऐसा तो नहीं है । लेकिन सम्पूर्ण रात्रि नीदनहीं आयी । इसलिए ऐसा लग रहा है । उस समय महाराज ने कहा आप को नींद तो आनी ही चाहिए । कारण कि आप मुझे अपनी तकिया बनाकर सो रहे थे, इस प्रकार मर्म मयी बात सुनकर नारायणभाई ने कहा महाराज आप कहना क्या चाहते हैं । तब महाराजने कहा आप मेरी चित्र प्रतिमा को तकिया के नीचे रख कर सो रहे थे, जिससे उस मूर्ति में से कराहने की आवाज आप सुनते थे । महाराज की ऐसी वाणी सुनकर सभी को समझ मे आ गया कि मूर्ति को चित्र मयी न समझकर मूर्तिमंत्र भगवान ही समझना चाहिए तभी प्रसन्न होंगे ।

पृष्ठ ५ से आगे

सद्विद्या

लुटारा था, उसे भी सभी जानते हैं । नारदजी को लूटने के लिए पकड़ा, लेकिन संत दर्शन-स्पर्श से राम नाम बोलने लगा । मरा-मरा कहते कहते राम-राम कहेने लगा । परिणाम स्वरूप बालिया से वाल्मिक ऋषि हो गया । ५६ करोड यादव भगवान के साथ रहे लेकिन भगवान को पहचान नहीं सके । परिणाम उनका क्या हुआ । गोपियां तथा ऋषि पत्नी ने भगवान को पहचान लिया तो वे मुक्त हो गये इह लौकिक तथा पारलौकिक सुख को प्राप्त की । यही सद्विद्या है ।

भगवान को पहचानना तथा उन्हीं को प्राप्त करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए । यही सच्ची विद्या है । भारत का एक वैज्ञानिक आहन स्टाईन को लिखा कि मुझे रिसर्च करना है । लेकिन मेरे परिवार का खर्च चलाने के लिए कही से पैसा दिलाये । वैज्ञानिक ने लिखा कि जो अपने घर का खर्च नही चला सके वह देश का क्या करेगा ? इसी प्रकार विद्या का उपयोग करने से विद्या बढती है । विद्या विनय से सुशोभित होती है । मतलब विद्याका पहले अपने लिए उपयोग करना चाहिए ।

"गाडर आणीए उन के कारण काता
हुआ कोकडा वही खाता है ।
धार न लवारनी सोयली चपण छे,
वचननी टेक ते विकट जाणो ।"

शिक्षादेने में शूर, शीखने में अधूरे, बडे प्रधान को सलहा दे तो भी ३५०/- रुपये की नौकरी न मिले, ऐसी विद्या किस काम की ?

सा विद्या या विमुक्तये ।

मुक्ति देने वाली विद्या ही विद्या होती है ।

एक जादू

- साधु सत्यप्रकाशदास (मूली)

जादू अर्थात् चमत्कार अथवा आश्चर्य । आजकल जादूकी या जादूगर की दुनिया का काफी विस्तार हुआ है । जादू अर्थात् - प्रेक्षकों की नजर में चमत्कार या अद्‌भुत आश्चर्य । लेकिन जादूगर के लिए मात्र हाथ की करामात है । यह कोई मंत्र की कला या साधना है इसमें कोई प्रमाण नहीं है । यह तो केवल प्रेक्षकों के लिए मनोरंजन है ।

सर्वोपरि भगवान श्रीहरि किसी जीवात्मा के संकल्प की मूर्ति के लिए कभी चमत्कार दिखाते थे । जैसे लोज गाँव में वर्णिवेश मस्तकपर चले थे । गाँव की स्त्रियों को गोबर के उथल में ब्रह्मांड का दर्शन कराया था । माता भक्ति को मुख में ब्रह्मांड का दर्शन कराया । सुवासिनी भाभी को आंगन में इमली की डाल लगाकर तुलसी का वृक्ष करके दिखाया । इस प्रकार नाना चमत्कार करके दिखाया है । इस के अलाँवा कोई मुमुक्षुजीवन संकल्प करे कि "आबु बतावे तो भगवान" इस संकल्प को भी पूर्ण करते । लाडुदानजी के मिलन प्रसंग पर विषमऋतु में गुलाब के हार की पहचान इत्यादि ।

भगवान श्रीहरि वर्णिवेश में गिरनार पर्वत की तलहटी में राधादेवी की जगह में रात्रि में रुके थे । आधीरात्रि में एक विशाल सिंह आया और प्रभु की दृष्टि पड़ते ही वश में हो गया, चरण चाटने लगा । केशरी सिंह रातभर तकिया का काम किया । प्रातः श्रीहरि उठकर विचार करने लगे कि सिंह की सवारी करके गाँव गाँव में फिरता तो लोग मेरी तरफ आकृष्ट होते और मेरी पूजा करते । ऐसा करने से जीवात्मा का उद्धार करने में मार्ग सरल हो जाता है ।

दूसरे ही क्षण में विचार करने लगे कि ऐसा करने से जीवात्मा का अज्ञान नहीं टलता । हमें तो ज्ञान मार्ग से ही उपदेश देकर जीवात्मा का कल्याण करना है । इस प्रकार शुभ संकल्प करके सिंह को विदा कर दिये । कैसा चमत्कार श्रीहरि ने किया । यही तो भगवान की लीला है । थोडे समय पूर्व निवृत्त आचार्य बडे महाराजश्रीने समस्त सत्संग को एक चमत्कार दिखाया जो हम बताना चा रहे हैं । गवाडा गाँव ता. विजापुर में भक्त चिंतामणी के पारायण प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ प.पू. बडे महाराजश्री पधारे थे, जिससे गाँव में आनन्द की लहर फैल गयी । सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वचन के बाद बडे महाराजश्रीने अपने आशीर्वाद में सभी को जादू बताते हुए एक बात कही कि "इस जगत में तन-मन के बहुत सारे रोगी हैं । तन के रोगियों की अपेक्षा मन के रोगी अधिक हैं । तन के रोगियों के लिए औषधि एवं डॉ. उपलब्ध है । लेकिन मन के रोगियों की दवा तथा डॉ. होते हुए भी निरोगिता नही होती । मन के रोगियों के लिए भक्तचिंतामणी का पाठ जादू है ।" स.गु. निष्कुलानंद स्वामीने अद्‌भुत यह ग्रन्थ लिखा है । जिसमें श्रीहरि की लीला का पठन श्रवण, मनन करने से मानसिक रोग से निवृत्ति होती है । भक्तजन ! राग-रागिनी में गाया जाता हुआ यह शास्त्र सभी त्यागी-गृही, स्त्री पुरुष के लिए महद् उपयोगी है ।

वाचक सभी मनोरगी होंगे ऐसा मेरा मंतव्य नहीं है । फिर भी हम सभी भवरोगी तो है ही । तो इस औषधि का जो सभी केलिए भव पार करने की एमात्र उपाय है उसका सेवन क्यो नहीं करते । जीवात्मा निरोगी होगी, इसके साथ सभी मुमुक्षुओं का भवरोग भी मिट जायेगा ।

प.पू. बड़े महाराजश्रीने भक्तचिंतामणी ग्रंथ को हंमेशा वांचन श्रवण करने की आज्ञा की है ।

कवि ब्रह्मानंद एक अध्ययन

मूल मुंबई के अभी एल.ए.में रहते डॉ. राजुलबहन दिनेशभाई गाला ने स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी के काव्यो पर मुंबई की युनिर्वसीटी में 'कवि ब्रह्मानंद एक अध्ययन नामका ६४४ पृष्ठ का महा निबंध तैयार कर M.A. Phd. हुए है । जो पुस्तक के रुप में प्रकाशित होने के पश्चात् दि. १७-१२-२००५ को अहमदाबाद स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. महाराजश्री के करकमलो से विमोचन किया गया था ।

जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि

- साधु अभयप्रकाशदास गुरु देवप्रकाशदास (अहमदाबाद)

इस जगत का मानव जैसी दृष्टि करता है वैसी उसकी सृष्टी होती है । चाहे जैसी सुन्दरवस्तु हो लेकिन उसकी दृष्टि खराब हो तो उसे सब कुछ खराब ही दिखाई देता है ।

एकबार एक महाशय गाँव में घूमने गये, गाँव तो गाँव ही होता है। लेकिन मजा की जगह होती है, खुल्लावातावरण, खुशनुमा वातावरण, स्वच्छजल, शुद्ध घी-दूध सभी कुछ शुद्ध ही रहता है इससे अधिक क्या चाहिए । उस शेठ को भी गाँव अच्छा लगने लगा था । गाँव में प्रतिदिन घूमने की मजा आ रही थी । वे गाँव में घूम रहे थे, उसी समय दुर्गन्ध आने लगी, थोडीदूर पर गन्दकी की सणांध दुर्गन्ध मार रही थी । यह दृश्य शेठने देखा, उसने नाकबन्द किया, मुह चढा लिया, बडा खराब लगा ।

अब तो वह शेठ वहाँ से अपना पैर उठाया और जहाँ से दुर्गन्ध आ रही थी उसी तरफ चला, उस दुर्गन्ध वाले स्थान को देखा तो बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसी गन्दकी के ढेर पर एक कमल खिला हुआ है, फूल खिला हुआ है ।

शेठ उस पुष्प को देखा, पुष्प हंस रहा था और सुगन्ध विखेर रहा था । शेठ इस खिले पुष्प को देखकर मुख से उद्‌गार व्यक्त करने लगा कि कितना आश्चर्य है एक ही जगह दुर्गन्ध तथा सुगन्ध का समन्वय । लेकिन दुर्गन्ध वाले स्थान पर सारे गाँव की गन्दकी आती है । जहाँ से निलकना बड़ा कठिन है । लेकिन यहाँ कितनी विचित्रता है कि फूल खिला हुआ है, हंस रहा है, सुगन्ध विखेर रहा है, यही इसकी विशिष्टता है ।

लेकिन मनुष्य का स्वभाव कितना विचित्र है उसे गन्दगी से बहुत चीढ है, दुर्गन्ध उसे पसन्द नही है, उसे पुष्प चाहिए, लेकिन गन्दगी नहीं चाहिए । गन्दगी के ऊपर का पुष्प कुछ अन्य रहस्य ही व्यक्त कर रहा है ।

जिन्दगी में हर समय याद रखना कि जो मनुष्य पुष्प के सुगन्ध की चाहना करते हैं उन्हें दुर्गन्धि से द्वेषनहीं रखना चाहिए । मनुष्य की आंख यदि पुष्प की तरफ न होगी तो गन्दगी दिखाई नहीं देगी । इन सभी बातों का मूल आधार मनुष्य की दृष्टि है । अब देखना चह कि मनुष्य की दृष्टि कहाँ है । जिसकी दृष्टि गन्दगी में है उसे गन्दगी ही दिखाई देगी । फूल के बदले में जब गन्दकी देखने की दृष्टि हो जाय तब समझ लेना चाहिए कि दृष्टि में ही दोष है । उसके भीतर भी गन्दगी है । जैसे गाँव या शहर में घूमते कुत्ते तथा सूअर को स्वच्छ बगीचे में छोड़ दिया जाय तो वे गंदगी वाली जगह खोजलेंगे । अंत में अन्दर की इच्छा ही बाहर आ जाती है । कितने मनुष्यतो गन्दगी, कीचड में हाथ डालकर ही काम करते हैं । कीचड में गिरकर काम करेंगे बाद में प्रचार करेंगे कि इस जगत में सर्वत्र गन्दगी ही फैली हुई है । गन्दगी कहीं नहीं है । गन्दगी केवल उनके मन में है । गन्दगी अन्दर है । बाहर नहीं है । जो बाहर है वह अन्दर का प्रतिस्म है । एक कविने कहा है -

देनार तो दे नयनों ज मात्र, शुं देखवुं ? ते कथवा न पात्र । सच्ची वात तो यह है कि आंखो से क्या देखना यह उसके हाथ में है । मन में क्या विचारना यह मनुष्य के हाथ में है । जब यह सब मनुष्य के विचारने पर ही निर्भर है तो अच्छा क्यों न विचारें । अच्छा क्यों न देखें ।

जैसे भरवाड के पास हीरा परखने की दृष्टी नहीं थी तो वह उस हीरे को चमकता पत्थर मानकर अपने बकरी के गले में बांध दिया, लेकिन उसी हीरे को परखने वाले के पास ले गया तो बहुत धन उसे मिला ।

यहाँ केवल एक गुलाब का दृष्टान्त ले तो गुलाब के वृक्ष पर गुलाब का फूल तो है ही लेकिन उसके साथ कांटे भी हैं । किसे देखे, कांटे को या फूल को यदि कांटे को देंखे तो गुलाब की सुगन्ध का आनन्द कैसे प्राप्त करेंगे । इसलिए आप की नजर कांटो पर नहीं गुलाब पर स्थिर होनी चाहिए । कांटा को देखकर मन को विगाडना नहीं चाहिए । गुलाब को देखकर सुगन्धमयी बनो ।अंत में

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १४

वासना

- विद्यार्थी साधु विनयप्रकाशदास,
गुरु ईश्वरचरणदासजी (धांगध्रा)

यं यं वापि स्मरन्भावं, त्यजन्त्यन्ते कलेवरम् ।
तं तमेवैति कौन्तेय, सदा तद्भाव भावितः ॥

इस जगत के जीवात्मा को अनेक प्रकार की वासना होती है । जैसे पिता को पुत्र की वासना मां को पुत्र की वासना, पुत्री की वासना, गाय को अपने बछडे की वासना होती है । इस प्रकार इस जगत में प्रत्येक जीव को अपने आत्मीय पर वासना होती है । इसी वासना के कारण प्रत्येक जीव भटकता रहता है ।

अपने मन के अन्दर होगा कि वासना क्या चीज है ? वासना अर्थात् आसक्ति । किसी भी स्थावर जंगम पदार्थ में प्रेमपूर्वक आसक्ति ही वासना कही जाती है । अनंत काल से यह जीव अनंत देह धारण करके जन्म-मरण को प्राप्त किया है । महाराज प्रथम के इग्यारहवें वचनामृत में कहते है कि पूर्व में जिस विषय को देखे हों, सुने हों वही अंतःकरण में इच्छा हो तो उसे ही वासना कहते हैं । और भी जिन विषयों का उपभोग न किया हों उसकी इच्छा भी वासना है । एक स्वामी ने बडा सुन्दर लिखा है ।

ज्यां वासना जेनी जरी रहे छे
ते जन्म तो त्यां जई ने लहे छे ।
माटे थजो सौ निरवासनिक
जो जन्म मृत्युनी होय बीक ॥

अर्थात् - जहाँ जिसकी वासनार हती है वही उसका जन्म होता है । इसलिये स्वामीने कहा कि सभी लोग निर्वासनिक होकर रहना । यदि पुनः जन्म मरण के बन्धन में न आना हो तो भगवान की भजन भक्ति करना और निर्वासनिक रहना ।

वासना में बंधा हुआ जीव अनेकवार पिता-पुत्र-स्त्री बनता है । अनेकबार पूर्व जन्म के शत्रु भी घर में आते हैं । वासना के कारण ही दादा पौत्र बनकर आता है । यह तो सभी को ख्याल है । तुलसी दासने लिखा है -

एक मृग के कारणे भरत धरी तीन देह ।
तुलसी उनकी क्या गति घर-घर करत सनेह ॥

एक मृग के बच्चे में वासना होने से उन्हें तीन-तीन बार जन्म लेना पडा था । लेकिन भरतजी को पूर्व जन्म के वृत्तान्त का स्मरण था इसलिए संत हो गये थे । परिणामतः उनका मोक्ष हो गया । लेकिन जगत के इस जीव को अपने इस जन्म का ही ख्याल नहीं रहता है तो अन्य जन्म की क्या बात है। विष्णु सहस्त्रनाम में भी कहा गया है ।

बासनाद्वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयम् ।
सर्व भूत निवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तु ते ।

वासना वासुदेव में रखनी चाहिए अर्तात् परमात्मा में रखनी चाहिए । जिससे बन्धन छूट सके । जबतक वासना स्मी डोरी को नहीं छोड़ेगे तब तक बन्धन से बधते रहोगे । विषय स्मी वासना की डोरी को छोड़ना होगा, तभी मुक्ति संभव है ।

एक चौबेजी गोकुल के लिए नाव में बैठकर निकले । परंतु भांग खूब पीये थे जिससे नाव की डोरी को खोलना भूल गये । लेकिन पतवार को जोर-जोर से मारे जा रहे थे । और जोर जोर से चिल्लाये जा रहे थे कि अभी हमारी नाव गोकुल गाँव पहुंच जायेगी । ऐसा करते-करते प्रातः तक पतवार मारते रहे जब भांग की नशा उतरी तो ख्याल आया कि अभी तो विश्राम घट पर ही नाव है । मथुरा में ही नाव है । इस दृष्टांत से यह समझना चाहिए कि - जिस प्रकार चौबेजी रात भर पतवार मारते रहे लेकिन जहाँ के तहाँ ही रहे जिससे उनकी मेहनत पानी में चली गयी । यह क्यों हुआ, कैसे हुआ, इसका कारण क्या था । तो वे भांग पीये थे, जिसकी नशा के कारण उन्हे होश ही नहीं था कि नाव का बन्ध खोले हैं या नहीं इसी प्रकार इस जीवात्मा को इन्द्रिय सुख स्मी नस चढी हुई है । जिस कारण वासना स्मी रस्सी को छोड़ना भूल गये हैं। बाद में नवधा भक्ति स्मी पतवार तो मारते ही रहना हो लेकिन गोकुल स्मी अक्षरधाम तो कभी नहीं मिलेगा । हे भक्तों ! वासना स्मी डोरी को छोड़कर श्रीहरि की भजन भक्ति करना तथा जगत में वासना न रहे लेकिन इस जगतपति में वासना रहे यही सतत विचार करते रहना, इसी में सभी का कल्याण है।

सच्चा अमृत

- सुव्रत स्वामी (उनावा)

समझ ही सच्चा अमृत है । जीवन में से जब समझ खतम हो जाय तब जिन्दगी भार रूप बनती है । फूलों से सजा मार्ग भी काटों से भरा लगता है । सर्वत्र सुगन्ध फैली हो तो भी दुर्गन्ध की वास आने लगती है । इसी पर कवि कहता है -

समझण जीवन मांथी जाय,
पछी जोया जेवी थाय ..... ।

जिसके पास सत्-असत् का विवेक समाप्त हो गया है, उसके लिये सभी कार्य खारे समुद्र के जल के समान हो जाते हैं । समझ मीठाजल के लोटे के समान है । कारण यह कि मीठा पाणी लोटे का क्यों न हो अर्थात् थोड़ा क्यों न हो तो भी व्यक्ति की प्यास उससे बुझजाती है । परंतु खारा जल वाला समुद्र अगाध होते हुए भी प्यासे की प्यास को बुझा सकता नहीं है ।

अहंकार, अभिमान तथा विषय वासनाओं से अंधा बना हुआ मानव कभी भी अपना तथा दूसरे के सुख को प्राप्त कर सकता नहीं है । अपना आत्महित तथा पर का हित प्राप्त करने के लिए जीवन की साम्या स्थिति को प्राप्त होना पडता है ।

जब नकुल, सहदेव, अर्जुन, भीम जल पीने के लिए व्याकुल हो गये थे उस समय अहंकार के कारण यक्ष का उत्तर नहीं दे सके, अंत में युधिष्ठिर के उत्तर से सभी बचे, यही समझ का उत्तम परिणाम था । यही समझ भव सागर पार करने में नौका का काम करती है । ऐसी समझ के लिए सत्य वस्तु का संग करना चाहिए । (१) सत्य अर्थात् परमेश्वर (२) सत्य अर्थात् शास्त्र (३) सत्य अर्थात् संत, इन तीनो के योग से यह लोक तथा परलोक दोनो सुधरता है । ऐसी अविनाशी तथा अमृत के समान भक्ति रूपी शक्ति का जिसमें संचार है वह वट वृक्ष के समान अनेकों को सहारा बनकर प्रकाशित करती है ।

जैसे दीपक में जब तक बत्ती का सन्सर्ग नहीं होगा तब तक प्रकाश विखरेगा नहीं, इसी प्रकार सच्चे गुरु के बिना सत्य वस्तु की पहचान नहीं हो सकती ।

स्वयं भगवान स्वामिनारायण ने भी समझाते हुए कहा है कि जब तक कुटुम्ब में, परिवार में भाई-भाई के बीच में मां बेटा या पिता के बीच में एक वाक्यता नही रहेगी, समझ नहीं रहेगी, आत्मीय प्रेम-आदर भाव नहीं रहेगा तब तक, ईर्ष्या-रोग द्वेष बना रहेगा और प्रगति बाधित रहेगी । कभी भी प्रभु की प्रसन्नता भी नहीं प्राप्त होगी ।

जैसे मछियाव की बूआ तथा उनके बेटे की पत्नी का आत्मीय प्रेम नहीं था जिसके लिए महाराज समझाने गये थे । संतो ने भोजन तैयार करवाया लेकिन पुरुषोत्तम नारायण की बात नहीं मानी, महाराज वहाँ से चले आये, अंत में संत भी चुल्हे पर का भोजन छोड़कर चल दिये थे । परिणामत: सत्संग में से उसका पतन हुआ और खूब दु:खी हुई थीं ।

इसलिए सदा सद्गुण प्राप्त के लिए जैसे गुलाब कांटो के भीतर रहता है फिर भी मुस्कराता रहता है । कमल कीचड़ में रहता है, फिर भी अपनी मृदुता कोमलता छोडता नहीं है, हरदम आनंद में रहता है । दुर्गुणो का त्याग करके सद्गुणों की महक प्राप्त करता रहता है । इसी प्रकार जीवको माया रूपी कांटो एवं कीचड में फंसा रहने के बाद भी सत्संग, कथावार्ता, ध्यान, भजन तथा सहन शीलता आदि सुखदायी तथा कल्याणकारी गुणों का सेवन करके सदा हंसते रहना चाहिए ।

किस लिए तो ! हर समय चोरी तो सोना-चांदी, हीरा, माणेक, मोती, लक्ष्मी की होती रहती है । लेकिन लोंढा की चोरी नहीं होती, इसी प्रकार सद्गुण हीरा, मोती जैसे है, उन्हें सम्हालकर रखना चाहिए यही सच्चा कर्तव्य है । सच्ची समझ तो कल्याण की चाभी है । सच्चे सुख का आधार है । पांडव जंगल में भटक रहे थे तो भी प्रसन्न थे । सबरी जंगल में भी आनंद में थी । जिस प्रकार लक्ष्मणजी राजसुख का परित्याग किये थे तोभी राम के साथ उन्हें सर्व सुख था, उसी प्रकार भक्तों का मूल सुख तो श्रीहरि का चरण है। यही सत्य समझ है । प्रत्येक

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १४

श्रवण भक्ति

- साधु कुंजविहारीदास गुरु जे.पी. स्वामी (जेतलपुर पाठशाला)

अपने भारतीय शास्त्रों में श्रवण भक्ति की खूब महिमा है । नवधा भक्ति में श्रवण भक्ति को प्रथम स्थान दिया गया है ।

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पाद सेवनम् ।
अर्चनं वंदनं दास्यं
सख्यमात्मनिवेदनम् ॥

भा. ७/५/२३

श्रवण तथा सुनना इन दोनों शब्दों में आकाश पाताल का अंतर है । श्रवण यह उत्कृष्ट कला है । सुनने के लिए कान पर्याप्त है । जब कि श्रवण में ध्यान की जरुरत होती है । ध्यान विना श्रवण संभव नहीं । सच्चा श्रोता हो तो वह जब सुनता रहता है तब आंख तथा कान दोनो तन्मय बन जाते हैं । कान से वक्ता के मुख से कथा श्रवण करते हैं तथा आंख से व्यास स्वरुप वक्ताश्री के मुखचन्द्र को देखते हैं ।

श्रवण भक्ति के आचार्य पृथुमहाराज हैं । जिसका वर्णन श्रीमद् भागवत महापुराण में किया गया है।

न कमाये नाथ तदप्यहं क्वचित्,
न यत्र चरणाम्बुजा सवः ।
महत्तमान्तर्हृदयान्मुखच्युतो,
विद्यास्त्वकर्णायुत मेष मे वरः ॥

भा.४/२०/२४

अर्थात् हे प्रभु हमे तो मोक्षपद की इच्छा नहीं है, जिसमें से महापुरुषो के हृदय से उनके मुख द्वारा निकला हुआ आपके चरण कमलों का मकरन्द नहीं है - जहाँ आपकी कीर्ति कथा सुनने का सुख नहीं मिलता । इसलिए मेरी तो यही प्रार्थना है कि आप मुझे दस हजार कान दे दीजिए, जिनसे मैंआपके लीलागुणों को सुनता ही रहूँ । प्रभु प्राप्ति के बाद प्रसन्न परब्रह्म परमात्मा इच्छित वर मांगने को कहें तब पृथुमहाराज को अवश्य याद करना । उत्तरप्रदेश के लोग सुनने वाले का तीन प्रकार बताते हैं - (१) सोता (२) सरौता (३) श्रोता ।

प्रथम प्रकार के लोग जहाँ कथा होती है कथा श्रवण के समय सो जाते हैं । कथावार्ता में ऐसे समाधिस्थ लोग प्रायःदेखने में मिलते हैं । निद्रां के लिये संस्कृत साहित्य में कुम्भकरण का दृष्टान्त आनन्द के लिए दिया जाता है । कुम्भकरण वर्ष में छ महीनें सोता था, जिससे निद्रा कुम्भकरण की पत्नी वन गयी । कुम्भकर्ण मरगया तो निद्रा विधवा हो गयी । विधवा स्त्री तो कथा सुनने तो जायेगी ही ।

द्वितीय प्रकार के सुनने वाले अर्थात् सरौता के समान होते हैं । वे विना समझ के एक दूसरे की काट करते रहते हैं । उन श्रोताओं पर व्यंग्य करते हुए अखा कवि ने कहा है -

कीधुं कशुं ने सांभळ्युं कशुं,
आंखनुं काजल गाले घस्युं ॥

मनुष्य को बहुश्रुत होना चाहिए । अनेक ज्ञानी इस वसुन्धरा पर विचरण करते रहते हैं । उनके पास से ज्ञान का भंडार मिल सकता है । परंतु उस ज्ञान रत्न को विवेक रुपी डोरी में पिरोने की क्षमता अपने में होनी चाहिए । सुभाषित में लिखा है -

यस्य नास्ति विवेकस्तु केवलं वो बहुश्रुतः ।
सन जानाति शास्त्रार्थं
दर्वीपाकरसानिव ॥

अर्थात् - जिसके पास अपना स्वंय का विवेक नहीं है, केवल बहुश्रुत है वह रसोई में फिरती हुई कलछुल के समान शास्त्रों के सारस्य रस को जान नहीं सकता ।

तीसरा सुनने का प्रकार है श्रोता । जो विवेकी होता है । "बा वाक्यं प्रमाणम्" की तरह किसी बात को स्वीकारता नहीं है । परंतु सुनीवात को ध्यान से मनन करते हैं । विचारों को आत्मसात् करके वह अपने चरित्र को अच्छी तरह उपयोगी बनाता है ।

पुरानी तथा प्रसिद्ध एक वात है । एक कारीगर तीन पुतला बनाकर राजा के दरबार में लेगया । राजा ने भाव पूछा, एक की कीमत एक सोने की मुहर बताया, दूसरे की सौ सोनामोहर बताया, तीसरे की एकहजार सोनामोहर बताया । राजा आश्चर्य में पड गया । एक समान तीन मूर्ति या पुतले की कीमत अलग अलग कैसे ? उसमें से एक प्रधान ने समझाने का प्रयास किया । उसने

एक पतला सूता लिया और प्रथम पुतला के कान में डाला तो इस कान से उस कान में निकला, दूसरे पुतले के कान में डाला तो मुख में निकला, इसी प्रकार तीसरे पुतले के कान में डाला तो पेट में उतर गया । इस प्रकार अपनी कीमत बढाने के लिए कथा श्रवण करके अपने अन्दर उतारकर मनन तथा निदिध्यासन करना चाहिए ।

भगवान श्री स्वामिनारायण ने भी वचनामृतमें प्रत्येक पत्रे पर दोहराया है । श्रीहरि सारंगपुर प्रकरण के तीसरे वचनामृत में कहते हैं कि "भगवान का दर्शन करके, वार्ता सुनकर यदि उसी का मनन निदिध्यासन निरंतर करते रहे तो प्रभु का साक्षात्कार हो जायेगा । अन्यथा सम्पूर्ण जीवन दर्शन श्रवण करते रहे तो भी साक्षात्कार नहीं होगा ।

इसलिए हमें भी सत्शास्त्रों का श्रवण करके मनन तथा निदिध्यासन करके प्रभु का साक्षात्कार करें यही प्रभु के चरणों में प्रार्थना ।

पृष्ठ १० से आगे

जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि

वस्तु तो एक ही है, परंतु उसे पहचानने की दृष्टि अलग होती है । जगत में यहि मनुष्य उत्तम देखना प्रारंभ कर दे तो खराब भी उत्तम दिखाई देगा । यदि खराब देखने की आदत हो गयी हो तो उसे सम्पूर्ण जगत खराब ही दिखाई देगा ।

महाभारत का एक प्रसंग है । एक बार भगवान श्रीकृष्ण ने दुर्योधन को कहा कि तूं इस जंगल में से अच्छे अच्छे मनुष्य को शोध करके लाना । दुर्योधन अच्छे मनुष्य की खोज में निकल गया । परंतु वह सभी के भीतर कुछ न कुछ अवगुण ही देखने लगा । इस प्रकार करते हुए सभी जगह घूमकर वापस आया तो सभी में अवगुण देखा और अपने को उत्तम मानने लगा । हमारे जैसा कोई नहीं है । इसी प्रकार बाद में श्रीकृष्णने युधिष्ठिर को आज्ञा किया जगत में खराब में खराब मनुष्य को खोज लाओ । वे खराब मनुष्य की खोज में निकले परंतु उन्हे सभी में कुछ न कुछ अच्छा गुण ही देखने में मिला । बाद में युधिष्ठिर वापस आये तो भगवान श्रीकृष्ण को कहे कि मेरे जैसा इस जगत में खराब कोई नहीं है ।

इस पर यह स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण जगत में सब एक ही जैसा था । लेकिन दुर्योधन को कोई अच्छा नहीं मिला जब कि युधिष्ठिर को कोई खराब नहीं मिला ।

किसी कविने लिखा है कि -

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिला कोई ।
जब अपने आप को देखा तो, मुझ जैसा बुरा न कोई ॥

परखने की दृष्टि यदि शुद्ध होगी तो उसे जगत में कोई खराब नहीं दिखाई देगा । परंतु यदि दृष्टि अशुद्ध होगी तो कोई अच्छा दिखाई नहीं देगा ।

इसीलिए अपना संस्कृत साहित्य कहता है कि "दृष्टि पूतं न्यसेत् पादम् अर्थात् दृष्टि से शुद्ध होने पर ही पग को आगे बढाना चाहिए ।

पृष्ठ १२ से आगे

सच्चा अमृत

स्थान, क्रिया, कर्म तथा उत्तरदायित्व से मुक्त होकर श्रीहरि के चरणों में स्थान प्राप्त करना चाहिए ।

यदि सच्चे सुख की इच्छा हो तो जब जीवन में दुःख स्मी तूफान आये तब परमात्मा को याद कर धीरजपूर्वक उसका सामना करना । पूर्व में अनेक राजा महाराजा सत्य और धर्म के राह पर चलने वाले प्रभु के प्यारे बने हैं।

इसलिए ज्ञानस्मी अमृत से जहर समान माया के व्यवहारिक और सामाजीक दुःखो को सहनशीलतापूर्वक पार करना और दुःख में भी सुख के सागर समान श्रीहरि परब्रह्म परमात्मा भगवान स्वामिनारायणको याद करना ही सच्ची समझ और सच्चा अमृत है ।

तो समझ स्मी अमृत पीकर प्रभु के चरणों में खिले हुए पुष्प जैसे जीवन को समर्पित करता हूँ । वही आपका दास ।

वचनामृत ग.प्र. ५

- प्रो. महादेव धोरियाणी (राजकोट)

श्रीजी महाराज वचनामृत में कहते हैं कि राधिकाजी के साथ ही श्रीकृष्ण भगवान का ध्यान करना चाहिए। वह मूर्ति हृदय में दिखाई न दे तो भी ध्यान करना चाहिए। लेकिन कायर की तरह ध्यान त्यागना नहीं चाहिए। ऐसा जो आग्रही हो तो उस पर परमात्मा की अहैतु की कृपा होती है।

यहाँ पर श्रीकृष्ण नाम अपने लिए ही कहा है। तथा राधिका मुक्तों के लिए कहा है। इसलिए मुक्तों के साथ श्रीजी महाराज का ध्यान करना चाहिए। मेरे विना कीसी अन्य अवतारों का ध्यान नहीं करना। इस विषय की स्पष्टता स्वयं महाराजने लोया के ११ वे वचनामृत में की है। महाराज कहते हैं - जैसी भगवान की मूर्ति अपने को मिली हो उसी का ध्यान करना चाहिए। इससे पूर्व जो अवतार हुए है उनका ध्यान नहीं करना चाहिए। पतिव्रता नारी की तरह एक निष्ठा भक्ति करनी चाहिए। जिस प्रकार पार्वतीने कहाँ है -

कोटि जन्म लगि रगड हमारी।
वरुं शंभु के रहुं कुमारी॥

इसलिए पतिव्रता की तरह टेक रखनी चाहिए। पतिव्रता की भक्ति को प्राधान्य दिया गया है। इसी प्रकार पर ब्रह्म परमात्मा के ध्यान की वात कही गयी है।

ग.प्र १९ वे में कहते हैं कि हमारा ध्यान करना लेकिन दूसरे देव का ध्यान नहीं करना। यदि दूसरे देव का ध्यान करें तो बडा दोष लगेगा। पतिव्रता धर्म का नाश हो जायेगा। वेश्या जैसी भक्ति हो जायेगी।

ग.प्र. ५ वे में कहते हैं कि - भगवान की बड़ी कृपा होती है तब स्वयं की मूर्ति का दर्शन देते है, इसमें ध्यान को महत्व दिया गया है।

ध्यान करना तथा ध्यान करने में कायरता नहीं करना। यह वचनामृत २३७ वाँ हैं जो सबसे कम पांच पंक्ति का है। परंतु इस वचनामृत का रहस्य समझने योग्य है। ध्यान एक अंतर्यात्रा है। सबसे अद्‌भुत वस्तु ध्यान है।

गीताकार कहते हैं कि ध्यान की ऐसी अवस्था होनी चाहिए "न किंचिदचिन्तयेत्" अर्थात् किसी भी अन्य विषय के चिन्तन का अवसर रहता ही नहीं।

निर्विचार ध्यान ही साधना का परम लक्ष्य है। मैं स्थूल या सूक्ष्म देह नहीं हूँ। परंतु चेतन स्वरूप हूँ। ऐसी वृत्ति बनाकर स्थिरता प्राप्त करना ही ध्यान है। ध्यान जीवन की सबसे बडी कला है।

ध्यान का लक्ष्य आत्मा तथा परमात्मा का मिलन है। पूर्ण श्रद्धा तथा दृढ विश्वास से मात्र लक्ष्य ऊपर दृष्टि स्थिर करना तथा एकाग्रता को प्राप्त करना ही ध्यान है। मोक्ष प्राप्ति के लिए ध्यान ही राजमार्ग है। श्रद्धा, भक्ति, ध्यान तथा योग यह चार मुमुक्षु मानव के लिए मुक्ति का उपाय है। ऐसा वेद कहते हैं। ध्यान के समय मन अन्तःकरण में प्रविष्ट हो जाता है।

ध्यान के समय गाढा संकल्प होना स्वाभाविक है। श्रद्धा तथा भक्ति की पूर्व भूमिका विना ध्यान सम्भव नहीं है। चंचल मन को इष्टदेव के स्वरूप में स्थिर करना। कारण यह कि एक ही स्वरूप वारंवार चिंतन करने से मन शुद्ध होता है। सनातन धर्म में देव अनेक होते हुए भी ईश्वर एक ही है। इसलिए सर्व देवों का पूजन करो लेकिन ध्यान इष्टदेव का ही करना चाहिए। ध्यान ही प्रेम की गति है।

ध्यान ध्याता तथा ध्येय इन तीनो का सुन्दर समन्वय होना चाहिए। मन शुद्धि स्नान-दान से नहीं होती। परंतु परब्रह्म परमात्मा का ध्यान करने से शुद्धि होती है। एक निष्ठा भक्ति यह एक अमोघ शक्ति है। प्रभु को प्राप्त करने का सीधा तथा नजदीक मार्ग ध्यान है। आप अपने जीवन भाव में भले विचरण कीजिए परंतु ध्यान के समय इष्ट देवता के ध्यान में एकाकार तथा ओतप्रोत रहना चाहिए।

ध्यान अर्थात् जीवात्मा का परमात्मा के साथ तादात्म्यानुभव। आत्मा तथा मन की एकता का नाम समाधि है। ध्यान सातवीं अवस्था है। जबकि समाधि ध्यान कि अंतिम अवस्था है। समाधि ध्यान का परम लक्ष्य है। ध्यान विना ब्रह्म संबंध शक्य नहीं। स्नान से शरीर की शुद्धि, दान से धनकी शुद्धि होती है। ध्यान से मन की शुद्धि होती है।

सत्संग सुरभि :

आपके साथी हम है

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदाबाद)

लांधणोज गाँव में महाराज तथा संत पधारे। उस समय सम्पूर्ण गाँव में आनन्द की लहर फैल गयी। गाँव में सत्संगियो की ही घर थे। कणबी कुटुम्ब के एक अमृतबाई भी थीं। महाराज के प्रति असीम प्रेम था। वे हृदय से भगवान को पुराकरती और कहतीं प्रभु एकबार घर पधारिये, संयोगवश आज महाप्रभु सामने से चलकर आ गये है तो कम से कम पांच घर भगवान पधारें, इस विचार से निवेदन कि आप घर पधारें आपको भोजन करना है।

महाराज बीच में ही बोले कि 'हमें रुकना नहीं है। महाराज संतो के साथ खडे हो गये और चलने लगे। अमृत बहुत आग्रह कीं तथापि महाराज सुने ही है।

चलते - चलते एक बगीचा आया, संत आम्र वृक्ष के नीचे आश्रय लिये, वह बगीचा अमृतबाई का था। अन्तर्यामी यह जानते थे। रात्रि में धुनि-कीर्तन प्रारंभ किये तो आसपास के बगीचे की रखवाली करने वाले एकत्रित हो गये, सभी के साथ खूब आनन्द किये। यह बात गाँव में पहुंच गयी, सुनते ही अमृतबाई जाग गयीं और बाहर आकर देखीं तो आधी रात बीत गयी है। प्रातः महाराज चले जायेंगे, इसलिए दीपक जलायीं और भोजन बनाना प्रारंभ कर दीं, आनन्द की लहर उनके शरीर में उठ रही थी, वे भोजन बनाकर सम्पूर्ण प्रसाद को मस्तक पर रखकर बगीचे की तरफ गीत गाते चल दीं -

कान तमारे कारणे हूँ तो घेलड़ी डोलूं रे।
घेलडी डोलूं रे तम बिना बीजूं न बोलूं रे॥

बीच में एक तालाब आया। कार्तिक अभी ही पूरा हुआ था। तालाब भरा हुआ था, अमृत को ऐसा हुआ कि जब यह तालाब सम्पूर्ण आकाश को समा सकता है तो मेरे हृदय में मेरे हरि क्यों नहीं समा सकते। चौदह भुवन के नाथ यहीं नजदीक में है अभी उन्हे पकडलेंगी "बड़ी तेजीसे उन का पग आगे बढने लगा।

थोड़े ही जाने पर उनका बगीचा आया। वहाँ तो खूब भीड़ लगी थी, दूर से ही, अमृत चिल्लाते हुए बोलीं अरे! मेरे आम्रवृक्ष के नीचे कौन है?

तब महाराज ने ही उत्तर दिया कि हम हैं? यह सुनकर अमृत प्रसन्न हो गयीं। मुख ऊपर पूर्व दिशा जैसी लालिमा विखर गयी। फिर भी पूछीं कि आप कौन हैं? प्रभु हमारे हैं इस इरादा से ही वे बोलीं थीं।

सामने से डुंगरजीकी आबाज आई। यहाँ महाराज पधारे हैं। इस आवाज को सुनकर इतनी आनन्दित थी कि जैसे मंगला आरती का घंटा रव हो। महाराज मेरे बगीचे में उतरे हैं ऐसा बोलते हुए आनन्दित आखों से महा प्रभु को देखा तो प्रभु, आम्रवृक्ष के नीचे पूजा कर रहे थे। प्रति दिन जिसका वे पूजा करतीं थीं उन्हीं को आज पूजा करते देखीं। उनके आनंद की सीमा न रही।

अमृत तुम यहाँ? इस समय? अभी कहाँ जा रही हो? मेरा साथी खेत में रात्रि निवास कर रहा है उसे भात देने जा रही हूँ।

देखें तो तुम्हारा भात कैसा है। दिखाओ, आज महाराज सामने से मांग रहे थे। अमृतबाई माथे से टोपला उतारी। मनुष्य को भगवान पूछते नहीं, जब पूछते हैं तो उसे सुनना नहीं आता है। जब भगवान सामने से पूछें तो उसके पास कोई उत्तर नहीं रहता है।

अमृतने टोपला में से शक्कर की तसली निकाल कर महाराज के सामने रख दिया। एक एक कर के टोपले में से भोजन के सभी पदार्थ निकाल दिये तब महाराज ने कहा कि तुम्हारा साथी रोज ऐसा ही भोजन करता है?

मेरा साथी बहुत मेहनत करता है, बहुत स्वाद वाला भोजन करता हैं। स्वादवाला ही भोजन चाहिए। जैसा तैसा नहीं। अमृतबाई हंसलने लगी, महाराज भी हंस रहे थे। उन्हों ने कहा अब रहने दो तुम्हारे साथी तो हम ही हैं।

हरि के विना जीव का सगा कोई नहीं है। इस प्रकार मीरा गाती। यहाँ भगवानने यह बात कही है। हिरण्याकशिपु प्रहलाद को पूछा "कहाँ हैं तुम्हारे हरि? बुलाओं उसे" उस समय प्रहलादने बताया कि वे मेरे साथ ही हैं। वे सब देख रहे हैं, सब सुन रहे हैं।

यहाँ तो स्वयं हरि ही कह रहे थे। लेआओ हमीं तुम्हारे साथी है। हमें खिलाओ।

पूजा विधि पूर्ण करके महाराज भोजन करने बैठ गये सेव परोसीं, बाद में घी परोसीं, तसली में से सक्कर परोसीं, सभी एक साथ करके महाराज ग्रास लिये। बाद में महाराज ने कहा अमृत दूध भी इसी में डाल दे।

बाद में महाराज ने कहा अब रहने दो बहुत हो गया। बगल में डुंगरजी खडे थे। उन्हों ने कहा डालने दीजिए महाराज पीछे से हम तो है न। स्वाद तथा लोलुपता व्यक्ति को नीच बनादेती है लेकिन यहाँ तो स्वयं हरि भोजन मांगकर खा रहे है, जिन्हे केवल प्रेम चाहिए, इसलिए तो सभी भोजन सामग्री को एक रस कर दिये और खाने लगे थे। प्रभु तो भक्त के आधीन है। थोड़ा खाये बचाप्रसाद

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १८

सत्संग बालपाठिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

देरवना चोरी न हो

- शास्त्री हरि स्वामी (गांधीनगर)

बालको को कहानी बहुत प्रिय होती है । कोई कहानी कहता हो तो कहानी सुनने के लिए बालक इकठ्ठा हो जाते हैं। भोजन करना भी भूल जाते हैं । खेलने की याद नहीं रहजाती, इसमें भी यदि पिताजी कहानी सुनाते हों तो और मजा आती हैं । दादाजी यदि कहानी सुनावे तो उससे भी अधिक मजा आती है । तो मित्रो ! यदि दादाजी की कहानी सुनने में आनन्द आता हो तो स्वामिनारायण भगवान कहानी सुनाते हो तो कितना आनन्द आयेगा । हम मध्यप्रकरण के पंचावनवें वचनामृत में श्री स्वामिनारायण भगवान की कहानी सुनें।

कहानी इस प्रकार थी कि एक गाँव में एक पटेल आगेवान थे । उनका लड़का विवाह के योग्य हो गया था । उनके पास स्रेय खूब थे अर्थात् धनी थे । खूब खर्चा करना चाहते थे । सबसे पहले सोने के अलंकार बनाने की बात हुई । इनके पास सोना था जिसे लेकर सोनी के पास गये और कहे कि सोनी भाई अलंकार बनाना है । लेकिन हमें किसी का विश्वास नहीं है । इसलिए हमारे सामने ही आप अलंकार बनाइये तभी आपको आर्डर देंगे । अन्यथा नहीं । तब सोनी भाईने कहा कि पटेल आप हमारे ऊपर व्यर्थ की शंकाकर रहे हैं । फिर भी आप इस गाँव के अग्रगण्य हैं, हम सभी में अच्छे सम्बन्ध भी हैं, इसमें हमें कोई इतराज नहीं है । आप यहीं बैंठे, आप के सामने ही आपका काम करके दे देंगे । आप जैसे हमारे यहाँ कहाँ बैठने आते हैं । यह तो सोना में सुगन्ध वाली बात है । पटेल बात करते हुए बैठ गये ।

सोनी भाई अपना कार्यारम्भ किये । भट्टी में गरम करना, नीचे उतारना, तत्सम्बन्धी काम चालू हो गया । पटेल भी चकोर दृष्टि लगाये हुए थे । इतने में सोनी का छोटा बेटा आ गया, हमें चाकलेट दीजिए, मुजे चाकलेट खाना है । सोनी ने कहा, इस समय तुम यहाँ से चलाजा पटेल का काम आवश्यक है और जल्दी करना है । लेकिन वह बालक नहीं माना रोने लगा । मुझे खिलौना चाहिए । मुझे पेन्सिल चाहिए । मुझे रब्बड चाहिए । सोनीने गुस्सा होकर कहा, अभीजा सबकु छ बाद में देंगे । मुझे काम करने दे । लेकिन बालक माना नहीं । अधिक हठ करने लगा । तो सोनी क्रोध में आकर अपने जूते को उसके उपर फेंक कर मारा । वह बालक सोनी के जूते को लेकर घर चला गया । थोड़ी देर में सोनीकी पत्नी वही बूट लेकर देने आयी, और कहने लगी कि इस प्रकार मारे कही लग गया होता तो । ऐसा कह कर बूट देकर चली गयी । सोनी पुन:काम में मन लगा दिया । लेकिन पटेल तो सावधानी से उसे ही देखे जा रहा था । उसे खबर भी नहीं पडी और सोना बूट मारफत घर चला गया । सोनी की पत्नी बूट खाली करके वापस दे गयी । इसे वचनामृत की भाषा में "पारसी" कहा जाता है । पारसी अर्थात् युक्ति । स्वामिनारायण भगवान कहते हैं कि जैसे सोनी का बालक, स्त्री होतो पारसी कहकर सोना ले जाती है । लेकिन वह पारसी क्या चीज है । वह अच्छी तरह समझ में आ गया होगा ।

इस दृष्टांत को प्रभु बडे सुन्दर ढंग से समझाते है - कि शुद्ध सोना जैसी अपनी आत्मा है । जिसमें से ज्ञान वैराग्य इत्यादि की चोरी हो जाती है । इसके बदले में जगत के दोष काम क्रोधादिक मिल जाते हैं । इसकी किसी को खबर भी नहीं पड़ती है । जिस प्रकार सोने में अन्य धातु को मिलाने से केरेट घट जाता है । इसी प्रकार जीव में दोष मिले तो जीव भी पीछे होता जाता है । जैसे सोने को बाद में शुद्ध किया जाता है, इसी प्रकार जीव भजन-भक्ति तथा सत्संग से शुद्ध होता है । हम एक सत्संगी के स्र में हैं कुसंगियो की सोहबत से दूर रहना चाहिए । वह कुसंग कभी मित्रता के नाम से, कभी पडोशी केनाम से, कभी परचित के नाम से, कभी स्कूल-कालेज के नामा से अपने जीवन में प्रविष्ट होकर सद्‌गुणों की चोरी न कर जाय । इस लिए सतत सावधान होकर शुद्ध सोना की तरह स्वामिनारायण भगवान की भक्ति, उपासना करके जीवन को धन्य बनाना चाहिए ।

•

सोना मोहर चाहिए

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

बालको को एक व्यापारी था । उसका व्यापार खूब चलता था । उस व्यपारी को कभी कभी बाहर जाना होता था । जिस कारण एक गाँव से दूरसे गाँव यही उसका क्रम था । कभी रात्रि में बिलम्ब भी होजाता था । एक दिन की घटना है, वह अपना काम पूरा करके वापस आ रहा था । सायंकाल निकलते समय उसे विलंब हो गया । वहाँ के व्यापारी ने रात्रि में स्कने को कहा । लेकिन उस व्यापारीने कहा यह तो मेरा रोज का धंधा है । हम पहुंच जायेगें । रात्रि में चन्द्रमां कि चांदनी खिली हुई थी । उस व्यापारी के हाथ में लाल टेन होते हुए भी उसने सोचा कि लालदेन की जस्रत नहीं है । तेल नहीं जलाना है । चन्द्रमां का प्रकाश पर्याप्त

है। दिखाइ दे रहा है। लेकिन आगे जाने पर जंगल का रास्ता आया, घने वृक्षों के कारण प्रकाश ढंक लिया गया था। अंत में व्यापारीने लालटेन को जलाया, लेकिन इसके प्रकाश में जल्दी पहुंचना होगा अन्यथा तेल अधिक जलेगा। इस प्रकार विचार करके बडी तेजी से चलने लगा। मनमें विचार किय कि जंगल में हिंसक जंतू दिखाई देंगे तो उनके लिए सूखी लकडी भी साथ लेलिया जलाकर प्रकाश करने के लिए। इतने में उसकी नजर पीपल वृक्ष पर पडी, उसके नेचे देखा तो बहुतायत में विच्छू थे, लेकिन वे अलग प्रकार के थे। इसलिए उसने विचार किया कि इतने अधिक विच्छू एक ही स्थान में क्यों ? निश्चित इससे फांयदा होना चाहिए। "मन में विचार किया यह बिच्छू नहीं हैं बल्कि सोना मोहर हैं"। उस व्यापारी ने झोली में से डोरी निकाली और एक विच्छू को बांध लिया। उस बिच्छू को अपनी दूकान के आगे बांधकर लटका दिया जिससे सभी को दिखाई दे। अब जो भी उसकी दुकान में खरीदने आता सभी की दृष्टि उस पर पड़ती, सभी शेठ से कहते आप को अच्छा सौख बिच्छी लटकाने का हो गया है। लेकिन सभी की सुनकर भी कुछ नहीं कहते। सभी को इसका रहस्य नहीं बताते थे।

संयोग वश एक दिन कोई दुकान में खरीदी करने आया तो कहा वाह शेठजी लगता है इस बिच्छी के लटकाने से आप का व्यापार अच्छा चलता होगा। क्यों भाई ऐसा क्यों लगता हैं शेठनेक हा। लगता ही है न यह सोना मोहर देखकर के ही कह रहा हूँ। उस व्यापारी को बिच्छी सोना मोहर ही दीखाई दे रही थी शेठ उस व्यापारी की तरफ देखने लगा। पक्के व्यापारी हो। लगता है तुम्हारे भी भाग्य में कुछ है। बाद में उसको साथ लेकर जहाँ से बिच्छी ले आया था वहीं ले गया। यही हमारी तुम्हारी भाग्यी है। ऐसा कहकर उस पीपल के नीचे उसी व्यापारी से खोदवाया तो वही पर सोना मोहर का घड़ा निकला। उसमें से उस व्यापारी को थोड़ा धन देकर प्रसन्न कर के बाकी स्वयं साथ लेकर वापस आया।

प्रिय भक्तो ! यह सत्संग सोना मोहर जैसा ही है। सत्संग मेंआकर जो अच्छा चिन्तन करे तो सोना मोहर अर्थात् सुख की प्राप्ति हो। तथा भगवान की कृपा से ऐसा दिव्य कल्याणकारी सत्संग प्राप्त हुआ है तो इसमें यदि अवगुण दिखाई दे तो समझना कि उसके जीवन में बिच्छी ही हैं, उसे कभी सुख नहीं मिलने वाला है।

इसीलिये तो स्वामिनारायण भगवानने वचनामृत में कहा है - कि इस सत्संग में जो विवेकी हैं वे गुण देखते हैं। वे उसी दिन से बडप्पन को प्राप्त करते हैं। तथा जो अविवेकी हैं वे अवगुण देखते हैं उनका उत्तरोत्तर पतन होने लगता है। इसलिए जिन्हे सुखी होना हो तो स्वामिनारायण भगवान मिले हैं, ऐसा सत्संग मिला है तो गुणग्राही दृष्टि रखेंगे तो सुखी होंगे और सर्वत्र जयजयकार होगी।

पृष्ठ १६ से आगे

सत्संग सुरभि : आपके साथी हम है

डुंगरजीको दिये।

अच्छा महाराज ? हमें सभी प्रसाद देदीजिए। डुंगरी तुरंत ही भोजन करने बैठ गये। लेकिन उसमें कोई स्वाद नहीं था। सभी एक रस हो गया था इसलिए डुंगरजी ने कहा यह तो नहीं खवा रहा है, इसे फेंक दूँ, तो महाराज ने कहा मांग के लिया गया है इसे कैसे फेंक सकते हैं। नहीं खाओं तो माथे पर थपेडा पडेगा।

यह देखकर अमृतबाई विचार करने लगी, शेष सक्कर, घी, दूध इसमें है फिर डुंगरजी क्यों नहीं खा रहे हैं। वे तसले में हाथ डालीं तो गलती का ख्याल आ गया। जल्दी में बजड़ी का आंटा सक्कर की जगह में डाल दिया और महाराज को तीनअंजली खिलाया।

अरे ! भूल हो गयी। महाराज माफ कर दीजिए। लेकिन विना सुने ही डुंगरजी को प्रेम से भोजन कराने लगे, कहते जाते डुंगरजी खाइये नहीं तो थप्पड लगेगा।

परमात्मा मानो जीव की परीक्षा ले रहे थे। किसी का प्रेम ऐसे नहीं होता कुछ त्यागना पडता है। मनुष्य को सुख चाहिए अकेले सुख भोगना है। इस में कुछ कमी रह गयी तो भगवान को दोषी बनाता है।

डुंगरजी गरीब बन गये। नजर नीचे करके भोजन करने लगे। मानो महाराज ठपका दे रहे हो। आप कुछ क्यों बोल नहीं रहे हैं। जो मिला है वह उत्तम है ऐसा मानकर क्यों भोजन कर लिए।

महाराज यह सब हम समझ लिए। जीव तथा परमात्मा दोनो अळग तो होते हैं न। जीव स्वादी होता है। परमात्मा भावना के भूखे हैं। इस प्रकार कितने प्रसंग हुए हैं। जिस प्रकार अमृतबाई ने भाव में आकर होश खो बैठी और सक्कर की जगह आंटा डाल दी इसी प्रकार कितने लोग किये होंगे, लेकिन महाराज तो भावना के भूखे हैं। भावना में भूल तो होती है। उस भाव के वशीभूत होकर महाराज सच्चे साथी बनकर साथ निभाते हैं। निर्दोष भावना भक्त की भगवान पहचान जाते हैं।

महाराज को अमृतबाई प्रसन्न करके आगे अपनी क्रिया सम्पन्न की। सारी सामग्री जो भोजन संबन्धी थी उसे लेकर गाँव की तरफ चल दीं, केवल उनके मन में एक ही विचार आ रहा था जो महाराजने बडा शकुन शब्द का प्रयोग किया "तारा साचा साथी तो अमे छीएन" महाराज आज मेरे साथी बने। अमृत की आंख में से आनन्द की अश्रुजल धारा बह रही थी।

?????????????? प्रश्न पेटी ??????????????



साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी

(श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ भगवान जबभी बाहर गाँव जाते उस समय मस्तक पर सगडी रखकर गरम गरम कौन भोजन कराता था ?

प्रश्न : २ शिक्षापत्री के ११४ वें श्लोक में भगवान ने क्या कहा है ?

प्रश्न : ३ बैद्य डॉक्टरको आँख बताकर सभीने आपरेशन करने के लिए समझाया .... इस कीर्तन में भगवान ने किसका स्मधारण किया है ?

प्रश्न : ४ दादा खाचर की दूसरी पत्नी किस गाँव की थी । उनसे विवाह के बाद महाराजके पास माँगे हुए पदकी रचना किसने की थी ?

प्रश्न : ५ "भीम, राधव, वशराम, राणा, एचार भक्त प्रभु के प्रमाण" एचार भक्त किस गाँव के थे ?

प्रश्न : ६ रावण किसका पुत्र था ?

प्रश्न : ७ इस जीव का जब सत्पुस्र का संग होता है, उस समय जैसे-जैसे समागम करता जाता है वैसे-वैसे उसके कर्म की वासना कम होती जाती है, पश्चात् उसे जन्म-मरण भोगने की वासना नहीं रहती," यह उत्तर श्रीजी महाराज किस वचनामृत में दिये हैं ?

अक्टूबर २००५ महीने के प्रश्नपेटी का सच्चा उत्तर तथा उत्तर देने वालों का नाम ।

(१) समुद्र पिता हैं । शास्त्र में उन्हें सागर तनया कहा गया है । (२) चार युग में प्रथम सत्ययुग में मुक्ति प्रधान, त्रेतायुग में योगसिद्धा, द्वापर में विशाला, कलियुग में बद्रिकाश्रम । (३) शतानन्द स्वामीने अमीर सरोवर में डुबुकी लगाई तो बद्रिकाश्रममें निकले वह सरोवर भुज में है । (४) इस पद के रचयिता स.गु. मुक्तानंद स्वामी हैं । (५) श्रीजी महाराज ने सच्चिदानन्द स्वामी को कहा और सच्चिदानंद स्वामीने उत्तर दिया "कि प्रभु यदि पीछे-पीछे चलूं तो आपके मुखारविन्द का दर्शन न हो और आगे चलूँ तो भी दर्शन न हो, इसीलिये बगलमें चल रहा हूँ ।" (६) शिक्षापत्री ८९ वाँ श्लोक । (७) ब्रह्माजी के मानस पुत्र नादरजी हैं ।

१. मावजीभाई आद्रोजा (मोरबी)
२. मकवाणा नीता, हेतल हीरजीभाई (सापकडा, सु.नगर)
३. डाभी मफाजी सरदारजी (कडी-डांगरवा)
४. सोनी भगवानदास वेलजीभाई (मोरबी)
५. नागजीभाई वी. पटेल (चांदलोडीया)
६. सांख्ययोगी बहन (माधापर-भुज-कच्छ)
७. नंदुबहन वरसाणी (माधापर-भुज-कच्छ)
८. सांख्ययोगी सविताबहन (मदनपुर-भुज-कच्छ)
९. उर्मिलाबहन, कल्पनाबहन (नवावाडज)
१०. त्रिभोवनभाई लक्ष्मणभाई (नवावाडज)
११. गोरधनभाई वी. सीतापरा (बापुनगर)
१२. अर्जुनसिंह पवार (धरियावद-राज.)

नोंट : उत्तर देने वाले लाइन वाले पेपर पर स्वक्ष अक्षर में लिखकर भेंजे तथा नाम स्पष्ट वांचा जा सके ऐसा लिखे ।

सत्संग समाचार

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य में धनुर्मास धुनि महोत्सव भव्यता से मनाया गया

सर्वोपरि भरतखंड के अधिपति श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य में तथा श्रीहरि के अपर स्वरूप प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में १६ दिसम्बर २००५ से १४ जनवरी २००६ पर्यन्त प्रसादीकी दिव्य सभा मंडप में आबाल वृद्ध हरिभक्त तथा संत प्रातःकाल अति ठन्डी में इस जीवात्मा से जितना अधिक प्रभु स्मरण हो सके तदर्थ श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुनि का दिव्य लाभ लिये । प.पू. बडे महाराजश्री (प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री अमेरिका की यात्रा में होने से) प्रातः ५-०० बजे मंगला आरती करने के लिए पधारकर भक्तों को अलौकिक लाभ देते ।

समस्त महिला वर्ग को दर्शन का सुख देने हेतु प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरूपा दोनो गादीवाला धुनि में पधारती थी । धर्मकुल सम्पूर्ण मास पर्यन्त धुनि कराकर तथा संत वृन्द द्वारा धुनिकराकर, हरिभक्तों द्वारा धुनि कराकर अपने जीवन की दिव्यता का लाभ लिया । पू. महंत स्वामी की प्रेरणा से तथा को.स्वा. धर्मप्रकाशदास एवं महंत शा. गोलोकविहारीदासजी तथा शा.सत्यप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन में कोठार के स्टाफ ने सेवा कार्य करके सभी को प्रसन्न किया । *- जयेश पटेल*

श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य में जयपट्ट

मार्गशीर्ष वद ११ ता. १७-१२-०५ के दिन सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के दिव्य सांनिध्य में प.भ. वासुदेवभाई गिरधरभाई गज्जर की माताजी अ.नि. रुक्मिणीबहन के स्मरणार्थ प्रातः काल ७ बजे से सायंकाल ४ बजे तक स्वामिनारायण महामंत्र धुनि का आयोजन किया गया था । प.पू. बडे महाराजश्री के वरद हाथों से धुनि का मंगल आरंभ किया गया था । इस धुनि में संत-हरिभक्त तथा खाखरिया विस्तार के हरिभक्त विशाल संख्या में उपस्थित होकर फलहारी रसोई तथा धुनि में भाग लिये थे । हरिभक्तों को स.गु. निष्कुलानंद काव्य तथा संतो को धोती दी गयी थी । इस प्रसंग पर स्वा. स्वयंप्रकाशदासजी, शा. आनन्द स्वामी, शा. हरिकृष्णदासजी, शा.स्वा. पूर्णप्रकाशदासजी तथा शा.स्वा. सत्यप्रकाशदासजीने यजमान परिवार के सेवा की प्रसंसा की थी । अंत में यजमान परिवार ने भगवान की आरती उतारकर जप यज्ञ की पूर्णाहुति की थी ।

- को. धर्मप्रकाशदास

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य में आयोजित श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह पारायण

सर्वावतारी श्री नरनारायणदेव के शुभ सांनिध्य में प.पू.ध.धु. बडे आचार्य महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू.अ.सौ. दोनो गादीवालाश्री के आशीर्वाद से तथा शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, अ.नि.ब्र हरिप्रियानंदजी तथा भुज मंदिर के महंत स.गु. पु.स्वा. हरिस्वरूपदासजी तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. निर्गुणदासजी एवं स.गु.पु. धर्मनन्दनदासजी (उपमहंत भुज) की शुभ प्रेरणा से सुखपर (कच्छ) की अ.नि.सां. बडी बालबाई की शिष्या सांख्ययोगी कानबाई वर्तमान (गढपुर) की शिष्या सां. मेघनाबहन की तरफ से इन्ही के गुरुके शुभ संकल्प से श्री नरनारायणदेव की प्रसन्नता हेतु मार्गशीर्ष शुक्ल-११ से वद-२ (ता. ११-१२-०५ से १७-१२-०५ तक वर्णिराज स.गु. वासुदेवानंद स्वामी रचित श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह पारायण का सुन्दर आयोजन किया गया था । वक्ता के रूप में स.गु. शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी (मांडवी) तथा स.गु. शा.स्वा. रामकृष्णदासजीने संगीतमें कथामृत पान कराया । हजारो भक्तोंने इस दिव्य आनन्द का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किया था । यजमान की तरफ से भोजनादिक की समुचित सातो दिन तक व्यवस्था की गयी थी । इसके अलावां ठाकुरजीको स्वर्णालंकार समर्पित किया गया था । धर्मकुल की सेवा तथा श्री स्वामिनारायण म्युझियम में सेवा, संतोकी सेवा करकेदेव-आचार्य-संत सभी को प्रसन्न किया गया था ।

सप्ताह पारायण के यजमान - हीराणी परिवार गाँव मानकुआ (वर्तमान नाईरोबी) अ.नि. नारायणभाई जादवभाई, अ.नि. प्रेमभाई नारायणभाई, अ.नि. कानजीभाई नारायणभाई, नानजीभाई नारायणभाई, गं.स्व. केसरबाई कानजीभाई, गं.स्वा. मेगबाई नानजीभाई, जयंतीभाई, अरविंदभाई तथा विजयभाई, अ.सौ. रंजुबहन जेंतीभाई, अ.सौ. कांताबहन विजयभाई, अ.सौ. मनीषाबहन अरविंदभाई, कानजीभाई हरजीभाई, पुजा मावजीभाई तथा लालजीभाई तथा वरसाणी परिवार गाँव । सामत्रा (हाल लंदन) मूलजीभाई लालजीभाई वरसाणी, ध.प. केसबाई मनजीभाई आदि परिवार ने यजमान पद का लाभ लिया था । मानकुवा, कमलापुर, परवाणा, शेडुभार, माचीयाणा सत्संग समाज सेवा में लगे थे । इस प्रसंग में संहिता पाठ में कुल ७ संत विराजमान थे । सभा संचालन शा.स्वा. अक्षरप्रकाश-दासजीने किया, साथ में पुराणी स्वा. कृष्णप्रियदासजीने (कच्छ-भुज) भी किया था । पूर्णाहुति के शुभदिन संत तथा हरिभक्तोंने यजमान परिवार के सेवा की खूब प्रशंसा की थी । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने यजमान के परिवार को हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

इस प्रसंग पर सां.यो. जयश्रीबहन गुरु मेघनाबहन तथा गढपुर एवं सुखपर की सां.यो. बाईयों ने खूब श्रद्धापूर्वक सेवा की सुवास फैलाई थी । वक्ता संत भी योग्यता पूर्ण अपनी कथा किये । शा.स्वा. हरिकृष्ण के मार्गदर्शन में देव स्वा. ब्र. पू. राज स्वामी, छोटे पी.पी. स्वामी, जे.पी. स्वामी, सूर्यप्रकाश स्वामी, बालू स्वामी, पार्षद दिगम्बर भगत तथा भूज के स्वा. अक्षरप्रकाशदासजी तथा के.पी. स्वामी आदि संतो खडे पगे सेवा का कार्य किये थे । सात दिन तक कोई प्रसाद विना रहा नहीं था । यजमान परिवार के ऊपर भरतखंड के अधिष्ठाता श्री नरनारायणदेव, श्रीहरि के धर्मवंशी परिवार तथा संत सभी अति प्रसन्न

हुए थे । यजमान परिवार का आत्यंतिक कल्याण होने में कोई संदेश नही, सभी को इसका उदाहरण लेना चाहिए । इस कथा प्रसंग पर, अहमदाबाद, मूली, भूज, गढपुर, जूनागढ, वडताल, धोलेरा देश के सभी संत पधारकर प्रसंग की शोभा को बढाये थे । ता. १५ की रात्रि में लंदन से प.भ. मनजीभाई वरसाणी तथा उनकी टीमने नंद संतो के कीर्तन का कार्यक्रम किया था । जिस प्रसंग पर प.पू. महाराजश्री पधारकर आशीर्वाद दिये थे । *- जे.पी. स्वामी गुरु शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी*

अ.नि. प्राणलाल देवचंदभाई परीख की स्मृति में छपैया धाम में "श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण"

सर्वावतारी भगवान श्री घनश्याम महाराज की जन्मभूमि छपैया धाम में अ.नि. प.भ. प्राणलाल देवचन्दभाई परीख (मुंबई) की स्मृति में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण ज्ञानयज्ञ का आयोजन किया गया था । मुम्बई से २५० जितने हरिभक्त कथाश्रवण का लाभ लिये थे । प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री अमदावाद से हवाई जाहज द्वारा छपैया पधारे थे । इसके साथ तीन दिन तक सभी को दर्शन का भी लाभ दिये थे । छपैया मंदिर के वयोवृद्ध गवैया महंत स्वामी रामकृष्णदासजी (वर्ष ९५) की प्रेरणा से तथा महंत ब्र. वासुदेवानंदजीने कडकडाती ठन्डी में हरिभक्तों को सुंदर व्यवस्था की थी । प.भ. जतीनभाई परीख, उमेदभाई परीख, सुनीलभाई तथा मातुश्री शारदाबहन प्राणलालभाई परीख ने उदार भावना से घनश्याम महाराज की प्रसन्नता हेतु सेवा की थी । इस प्रसंग पर प.पू. बडी गादीवाला श्री बहनों को दर्शन का लाभ देने पधारी थीं । ता. ३-१२-०५ से ९-१२-०५ तक कथा का आयोजन किया गया था । पारायण के वक्ता प.पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) के थे । इस प्रसंग पर अहमदाबाद, जेतलपुर, गढडा, कांकरिया, लोज इत्यादि धामों से संत महंत पधारे हुए थे । *- ब्र. अविनाशानंदजी*

कठलाल के प्रसादी के कुए का जीर्णोद्धार

भगवान श्री स्वामिनारायण जब कठलाल पधारे थे उस समय वृद्धा रामबाई ने महाराज के चरण को धोकर कूप में डाल दी थी । जिस कूप का जल १०० वर्ष तक ग्राम जनो ने पालन कर जीवन को धन्य बनाया था । समय बीतते कूप का जल नीचे चला गया जिससे ट्यूबवेल द्वारा पानी को बाहर निकाला जाता था । यह कूंआ अति प्राचीन होने से तथा प्रसादी का होने से जीर्णोद्धार प.पू.ध.धु. आचार्य महाजश्रीकी आज्ञा से तथा पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन में प.भ. कीरीटभाई जयंतीभाई पटेल कठलाल वर्तमान (यु.एस.ए.) जिसके भाई सुरेशभाई तथा दिनेसभाई है उनके सौजन्य से जीर्णोद्धार किया गया । जिसमें हैडपंप द्वारा प्रसादी का जल सभी सत्संगियों को मिल सकता हैं । स्मृति का पत्थर बनाकर प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से ता. १९-११-०५ के दिन श्रीजी महाराज के चरणारन्दि की प्रतिष्ठा की गयी थी । सुप्रसिद्ध दर्शनीय स्थल "लक्ष्मीकूंआ" का दर्शन तथा प्रसादी का जलपान करने हेतु हरिभक्त पधारते हैं । जलपान करके धन्यता का अनुभव करते हैं । *- को. महेशभाई काछीया*

बडु में श्री हनुमानजी महाराज का प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

दंढाव्य प्रदेश के प्रसादी के बडु गाँव में स.गु. वर्णिराज वासुदेवानन्द ने श्रीहनुमानजी महाराज को प्रतिष्ठित किया था । वह मंदिर जीर्ण होने से पुनः जीर्णोद्धार का कार्य शिल्प शास्त्र के अनुसार कलात्मक ढंग से किया गया है । जिसके पूर्ण होते ही बडे महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा.स्वा. नारायणवल्लभ की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर का ६ठवां पाटोत्सव तथा श्री हनुमानजी महाराजकी प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव मनाया गया । जिसके उपलक्ष्य में ता. ३-१२-०५ से ७-१२-०५ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण पन्चाहन पारायण, त्रिदिनात्मक ५१ कुंडी मासतियज्ञ का सुंदर आयोजन किया गया था । पारायण के वक्तापद पर पू. महंत शा.स्वामी निर्गुणदासजी तथा शा. विश्वप्रकाशदासजी (वडनगर)ने कथामृत पान कराया । संहितापाठ में शा. अभिषेक प्रसाददासजी थे । इस प्रसंग पर शा.स्वा. हरिकेशवदासजी (गांधीनगर) शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी हिंमतनगर, नारायणपुरा, नारायणघाट के महंतश्री तथा रामकृष्णदासजी शा. छपैयाप्रसाददासजी इत्यादि संत प्रासंगिक प्रवचन किये थे ।

ता. ७-१२-०५ के दिन प्रातः प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री वडुगांव में पधारे उस समय हजारों हरिभक्तों ने जयघोष के साथ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पुष्प वर्षा करके स्वागत किया था । वरघोडा में पधारकर श्री हनुमानजी महाराजके नूतन भव्य मंदिर में पधारकर अपने कुलदेवता श्री हनुमानजी महाराज की प्राण प्रतिष्ठा करके आरती उतारे थे । बाद में यज्ञ की पूर्णाहुति किये थे । सभा में यजमानों को तथा अग्रणी हरिभक्तों ने प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन करके आरती उतारी थी और आशीर्वाद प्राप्त किया था । राज्य सभा के गाँव के सांसद प.भ. डॉ. ए. के. पटेल तथा प.भ. नवीनभाई भावसार(वड) प्रासंगिक उद्बोधन किया था । शा. विश्वप्रकाशदास तथा छपैया प्रसाददासने श्री हनुमानजी के पुराण प्रसिद्ध इतिहास का वर्णन किया था । अंत में समस्त सभा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । इस मंदिर का कार्य यहाँ के तथा विदेश में रहते हरिभक्तों द्वारा पूर्ण हुआ था । यहाँ प्रतिष्ठा कार्य में तथा निर्माणकार्य में को. कालिदासभाई जयंतीभाई, श्री गोविंदभाई, श्री प्रविणभाई, मूक सेवक श्री जयंतीभाई कोठारी श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के युवान श्री जशुभाई, अशोकभाई आदि नानी अनामी, हरिभक्तों की सेवा प्रशंसनीय एवं प्रेरणास्पद रही । बाद में महाराजश्री मंदिर में पधारकर श्रीहरिकृष्ण महाराज का अभिषेक करके अन्नकूट की आरती उतारने पधारे थे । अंत में भोजनप्रसाद लेकर अहमदाबाद के लिए प्रस्थान किये थे । हजारों की संख्या में हरिभक्तों ने दर्शन का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किया था । *- प्रवीणभाई पटेल*

हिंमतनगर मंदिर का १६वां पाटोत्सव धूमधाम से संपन्न

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में

विराजमान बालस्वरूप घनश्याम महाराज का १६वां पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से ता. ६-१२-०५ के दिन वेद विधि से धूमधाम से संपन्न किया गया था । महंत शा.स्वा. आनन्दजीवनदासजी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव के चुस्त निष्ठावान प.भ. अमीनचन्दभाई एन. प्रजापति परिवारने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का स्वागत करके सभा में आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किये थे। बाद में श्री मनुभाई प्रजापति, श्री हीरेनभाई, श्री राकेशभाई, श्री संदीपभाई तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने ३४ दीपक से प.पू. आचार्य महाराजश्री की आरती की थी । प्रजापति समाज के अग्रणी हरिभक्तों ने तथा स्थानिक हरिभक्तों ने प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन किया था । संता की प्रेरणावाणी के बाद प.पू. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था। अपने आशीर्वाद में नरनारायणदेव का आश्रयही मोक्ष को देनेवाला है, अत: आश्रय कभी न छोडने का सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था।- *पू. स्वा. हिंमतनगर*

ध.धु. आचार्य श्री देवेन्द्रप्रसादजी केळवणी ट्रस्ट का शैक्षणिक समाचार

यहाँ के श्री सहजानंद सेकेन्डरी स्कूल के ९मी कक्षा में अभ्यास करनेवाली कुमारी मेहल शाह की गुजरात की टीम में विमेन्स क्रिकेट एसोसिएशन ओफ इन्डिया द्वारा २३ से ३ दिसंबर तक आयोजित सब जूनियर नेशलन क्रिकेट चेम्पियन शिप के लिये चयन किया गया था । इस स्पर्धा में २० जितने राज्य भाग लिये थे। इतने राज्यों में से अपने स्कूल की विद्यार्थीनी कु. मेहल शाह अपने स्कूल तथा ध.धु. आचार्य महाराजश्री देवेन्द्रप्रसादजी केळवणी ट्रस्ट संकुलकी गौरव है। उपरोक्त विद्यार्थीनी की उत्तरोत्तर प्रगति हो इस हेतु से पूज्या गादीवाला हार्दिक आशीर्वाद देती है।

- श्री संदीपभाई चोकसी

घमासणा मंदिर में शाकोत्सव संपन्न

धमाणसणा श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. १८-१२-०५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से प्रति वर्ष की तरह इस वर्ष भी शाकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस प्रसंग पर अहमदाबाद, मूली तथा छोटे-बडे सभी धामों से संत पधारे थे । शाकोत्सव के मुख्य यजमान मुखी परिवार तथा धर्मकुल के मुख्य यजमान प.भ. पोपटभाई तथा सभी हरिभक्तोंनें सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त की थी। इस गाँव में अ.नि. स्वा. विष्णुप्रसाददासजीने बहुत लोगों को श्री नरनारायणदेव का निष्ठावान, मुमुक्षु बनाया था। प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ ब्र. राजेश्वरानन्दजी, शा. सत्यप्रकाशदासजी, राजू स्वामी, शा. पूर्णप्रकाशदासजी हरिद्वार से को.स्वा. स्वयंप्रकाशदासजी उपस्थित थे । ५००० से अधिक हरिभक्तों ने भोजन का प्रसाद लिया था ।- *धमासणा सत्संग समाज की तरफ से नरनारायण स्वामी गुरुमुनि स्वामी*

भचाउ श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

कच्छ के प्रवेश द्वार के समान श्रीहरि का प्रसादीभूत भचाउ में १५० वर्ष पुराना श्री स्वामिनारयण मंदिर पांच वर्ष पूर्व भूकंप से ध्वस्त हो गया था। जिसका पुन:निर्माण किया गया था। इस प्रसंग के उपलक्ष्य में स.गु. निष्कुलानंद भाष्य की पारायण कथा शा. अक्षरमुक्तदासजी तथा शास्त्री नीलकंठदासजीने किया था। सभा संचालन शा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजीने, जे. के., सूर्यप्रकाश आचार्य तथा शा. अक्षरप्रकाशदासने किया था।

ता. ४-१२-०५ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री जब पधारे उस समय संत हरिभक्तोंने धूमधाम से स्वागत किया । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने नारीयल का होमकरके पूर्णाहुति की थी। नूतन मंदिर में ठाकुरजीकी प्राण प्रतिष्ठा करके आरती उतारे थे। इस प्रसंग पर हजारों हरिभक्त दर्शनार्थ आये थे । भुज के महंत स्वामीने सभा में आशीर्वाद दिया था । अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद सभीको दिया था।

प.पू. आचार्य महाराजश्रीने नवनिर्मित लोहाणा समाज की वाडी में पुनीत चरण रखकर ज्ञाति प्रमुख लावमशीदीपचंद ठक्कर को हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

प.भ. खीमजीभाई नीशरआदि परिवारकी सेवा प्रशंसीय थी।

भचाउ मंदिर के उत्सव की पूर्णाहुति समग्र ट्रस्टी मंडल की तरफ से आभार विधि श्री घनश्याम खीमजीभाईने किया था।

- मनुभाई ठक्कर

मूली प्रदेश का सत्संग वृत्तान्त

अंबाला (हालार) में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण

मूलीश्री राधाकृष्णदेव देश के हालार अंबाला गाँव में ता. १७-११-२००५ से २३-११-२००५ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण प.भ. केशुभाई रुडजीभाई चौहाण के यजमान पद पर शा.स्वा. रामकृष्णदास के वक्तापद पर धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ । पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प. पूज्या गादीवालाश्री प.पू. लालजी महाराजश्री एवं पूज्या श्रीराजा पधारकर भक्तों को दिव्य आनन्द दिये थे। प.पू. महाराजश्रीने अति प्रसन्न होकर यजमान परिवार तथा भक्तजनों को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । समग्र आयोजन का कार्यभार पी.पी. स्वामीने सम्हाला था।

- दयालजीभाई गांगाणी वाडज

बारेणा ता. लीवडी (मूलीदेश) गाँव में बहनों के मंदिर की प्रतिष्ठा

मूली के स.गु. स्वामी सूर्यप्रकाशदासकी प्रेरणा से बहनो के सुंदर मंदिर का निर्माण कार्य पूर्ण होने से ता. १-१२ से ३-१२-०५ तक मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। श्रीमद् भागवत दशम स्कन्ध की त्रिदिवसीय कथा के वक्ता शा.स्वामी निर्गुणदासजी (महंत श्री अहमदाबाद) स्वामी ब्रह्मविहारीदासजी (मूलीधाम) तथा शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजीने सुन्दर लाभ दिया था। त्रिदिनात्मक यज्ञ में यजमानों ने भाग लिया था । ता. ३-१२-०५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज पधारे थे। उस समय गाँव के भक्तों ने उत्साहपूर्वक स्वागत किया था । पुरुषों के मंदिर में आरती उतारकर, बहनों के नूतन मंदिर में महाराजश्रीने भाव पूर्वक घनश्याम माहाराज की मूर्ति प्रतिष्ठा करके अन्नकूट तथा यज्ञ की पूर्णाहुति करके आरती उतारे थे। सभा

में अहमदाबाद, मूली, चराडवा, हळवद, वडताल, सुरेन्द्रनगर आदि धामों से संत पधारे हुए थे । हरिभक्तों को आचार्य महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिया था। इस दिव्य प्रसंग से गाँव में सत्संग की नयी प्रवृत्ति आयी है।

विदेश सत्संग वृत्तान्त

एल.ए. (केलीफोर्निया) (I.S.S.O.) मंदिरका पांचवा पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया

अमेरिका के केलीफोर्निया के नोरवोक (I.S.S.O. चेप्टर) अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर के पांचवे पाटोत्सव के प्रसंग पर श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री २१ दिसम्बर-२००५ को जब पधारे उस समय हरिभक्तों ने खूब उत्तम ढंग से स्वागत किया था। सभी भक्तजन महाराजश्री का दर्शन करके भाव विभोर हो गये । इस प्रसंग पर कथा पारायण का आयोजन किया गया था । जिस उपलक्ष्य में २१ दिसम्बर की साम को ६-३० बजे सनातन मंदिर के पार्किंग में से हरिभक्तों ने पोथीयात्रा निकाली थी। जिसमें बहनो ने पीली साडी पहनकर यात्रा को और अधिक सुशोभित किया था। मंदिर में वैसी ही साडी राधिकाजी को भी पहनायी गयी थी ।

यात्रा में नाना विध वाद्य यंत्र बज रहे थे। जिससे वातावरण बड़ा सुहावना लग रहा था । बहने गीत गाते हुए मस्तक पर कलश लेकर चल रही थी। पोथीयात्रा मंदिर आयी तो उस समय आतिशबाजी का प्रदर्शन मोहक था। प.पू. महाराजश्री जब सभा में विराजमान हुए उस समय ट्रस्टी मंडल तथा प.भ. नटुभाई महाराजश्री का पुष्पहार से स्वागत पूजन किये थे ।

यहाँ के मंदिर के महंत स्वामी केशवचरणदासजी, घनश्याम स्वामी अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी शा. निर्गुणदासजी, शा. सूर्यप्रकाशदासजी, माधव स्वामी, स्वा. माधवप्रसाददासजी, पार्षद वनराज भगत उपस्थित थे ।

पू. महंत शा.स्वा. निर्गुणदासजी व्यास पीठ पर विराजमान हुए थे। श्री अशोकभाई पंड्या तथा हरिभक्तों द्वारा पुस्तक का पूजन किया गया था । पोथी पूजा का यजमान रश्मिबहन प्रकाशभाई पटेल, लक्ष्मीबहन लालभाई पटेल तथा कमलाबन ईश्वरभाई पटेल विशेष लाभ लिये थे । प्रथम दिन वक्ताश्रीने अर्जुन की तरह समर्पण भाव रखने की बात की । सभा में प.पू. महाराजश्रीकी यजमान, परिवार द्वारा आरती की गयी थी तथा पूजन करके आशीर्वाद प्राप्त किया गया था । प्रथम दिन ४०० परिवारो ने लाभ लिया। दूसरे दिन गीता के ४ से ६ अध्याय का सार वक्ताश्रीने बताया था। इस प्रसंग पर महंत स्वाम ीने तथा शा. सूर्यप्रकाशदासजीने प्रेरक प्रवचन किया था। तीसरे दिन भक्तिमय वातावरण में समाज सेवा के साथ अलग अलग तीन प्रवृत्तियां प्रारंभ हुई थी । जिस में पार्किंग एरिया में मेडिकल केम्प पोस्टन से आये हुए डॉ. हितेश पटेल के मार्गदर्शन में २६ लाभार्थियों ने लाभलिया था। जिस में डॉ. मनोजभाई पटेल, नर्स शीलाबहन पटेल, कायरो प्रेक्टर डॉ. नयनभाई पटेल तथा साथ में I.S.S.O. के युवा कार्यकर्ता भाई-बहन सभी ने उत्साहपूर्वक सेवा की।

मंदिर के तीसरे मंजिल पर युवा केम्प में ७५ बालकों को इस्टकोस्ट में से आधेहुए युवान धार्मिक तथा कल्चर शिक्षण अंग्रेजी में दिये थे। सभा मंडप में प.पू. महाराजश्री की उपस्थिति में वक्ता महोदयने गीता भाष्य पर सुन्दर प्रवचन दिया था। जिसका ५०० जितने कथा रसपान किये थे । आरती से पूर्व यहाँ के महंत स्वामीने तथा माधव स्वामीने प्रासंगिक प्रवचन किया था । पाटोत्सव के चौथे दिन शनिवार को प्रात: ७-३० से ९-०० बजे तक समूह महापूजा का आयोजन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज के यजमान पद पर किया गया था। जिसमें ४० परिवारोंने लाभ लिया। महापूजा विधि श्री सुधाकर त्रिवेदी (सानहोजे) श्री अशोकभाई उपाध्याय (लामीरीडी) तथा अशोकभाई (नारवोक)ने कराई थी । श्री गणेश पूजन, श्री स्वामिनारायण भगवान का पूजन, अंत में जनमंगल सहस्त्रनाम का पाठ किया गया था। महापूजा की पूर्णाहुति आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने उतारी थी और सभी को आशीर्वाद दिया था । पूजा के अंत में उपवासी भक्तों ने प्रसाद का अल्पाहार लेकर पारणा किया था ।

९ से १२ कथा श्रवण के बाद १२-०० की मध्याहन की आरती में बडी संख्या में हरिभक्तोंने भाग लिया था । १२ से ४ बजे तक मेडिकल केम्प में ५० व्यक्तियों ने अपना स्वास्थ्य केम्प के संचालक डॉ. सोनल पटेल, डॉ. शीतल पटेल, डॉ. हितेश पटेल और डॉ. ज्योतिबहन पटेल के पास चेकअप करवा कर लाभ प्राप्त किया था । इस अवशर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने केम्प की मुलाकात लेकर डॉक्टरो को आशीर्वाद दिए थे ।

रात्रि को आरती के पूर्व घनश्याम स्वामीने प्रवचन में खूब हंसाये थे । इस अवशर पर पू. महाराजश्रीने मेडीकल केम्प के प्रत्येक स्वयंसेवको को श्री नरनारायणदेव की मूर्ति तथा प्रमाणपत्र देकर उनकी सेवा का सम्मान कर आशीर्वाद दिए थे । सभा में डाउ के मंदिर के स्वामी सत्यप्रकाशदासजी आदि संत प.पू. महाराजश्री के दर्शन के लिए पधारे थे ।

रविवार को पूर्णाहुति के वक्त ६ से ६-१५ तक मंगला आरती और पश्चात् ७-३० बजे से भगवान स्वामिनारायण, श्री राधाकृष्णदेव का अभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराश्री के करकमलो से वेदविधि पूर्वक ८-४५ बजे संपन्न हुआ था। जिसका लाभ लेकर सभी भक्तजन धन्य हुए थे । हरिभक्तों ने भगवान श्री स्वामिनारायण और पू. महाराजश्री के जयघोष के साथ पाटोत्सव की पूर्णाहुति की और अल्पाहार किया था। पश्चात ९-०० बजे कथा प्रारंभ होकर १०-१५ को पू. महाराजश्रीने कथा की पूर्णाहुति की आरती उतारी थी। स्वामीने पूर्णाहुति में गीता के १८ अध्याय का सार सुनाया था।

पश्चात सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन आरती यजमान परिवार श्री विनोदभाई पटेल, समीरभाई मारफतिया तथा ललीताबहन, शिल्पाबहन तथा निमिषा बहनने संप्रदाय की मर्यादा के मुताबिक दूर रहकर पूजा विधि का लाभ लिया था ।

अंत में नोरवोक I.S.S.O. के ट्रस्टी श्री नटुभाई पटेल, श्री रमणभाई भजेचा, श्री अरविंदभाई पटेल, श्री भक्तिभाई पटेल,

श्री जयंतीभाई पटेल, श्री प्रकाशभाई पटेल, श्री रसिकभाई परीख, श्री रसिकभाई चौधरी, श्री ईश्वरभाई चौधरी, श्री देवराज केराई तथा श्री संजय पटेल आदि लोगो ने प.पू. महाराजश्री का पुष्पहार से पूजन कर आशीर्वाद प्राप्त किया था। पश्चात उछालने का कार्यक्रम शुरु हुआ था। जिसमें श्री घनश्याम महाराज तथा श्री कृष्ण भगवान का खेश, कंठी आदि हरिभक्तों के समक्ष रखे गये तथा श्री राधिकाजी की साडी तथा कंठी तथा सभी ध्वजा को उछाला गया था। जो सुरभीबहन, जयंतभाई पटेल, सुधाबहन अरविंदभाई पटेल, नीताबहन रमणभाई भड्डेचा, राकेशभाई पटेल, रश्मिबहन प्रकाशभाई पटेल, हंसाबहन पटेल, नीता, ध्रुवल शाह और पंकजभाई बारोट ने उत्साहपूर्वक चीजो की प्राप्ती की थी। अंत में महंत केशवचरणदासजीने प्रासंगिक प्रवचन किया था। तथा पू. महाराजश्रीने समस्त सभा को आशीर्वाद दिया था। प्रमुखश्री नटुभाई पटेल ने आभार विधि की थी। हरिभक्तों ने थाल कर भगवान को भोजन कराया था। अन्नकूट आरती के मुख्य यजमान भारतीबहन सतीषभाई पटेल थे। अन्नकूट की आरती प.पू. महाराजश्री ने उतारी तब हजारो दर्शनार्थी दर्शन के लिए आये थे। जिसमें यजमान परिवार भी आया था। पाटोत्सव में ५०० जीतने हरिभक्तोने प्रेम-श्रद्धा पूर्वक भाग लिया था। पाटोत्सव की पूर्णाहुति के बाद प.पू. महाराजश्रीने संतमंडल के साथ सीनसीनाटी जाने के लिए प्रयाण किया था। तथा लंडन, बोस्टन, न्युजर्सी, फ्लोरीडा, फीलाडेल्फीया, सानहोझे, ह्युस्टन, सेक्रामेन्टो तथा शिकागो से आये हुए भक्तोकी अन्नकूट का प्रसाद लेकर बिदाई हुई थी।

- नटुभाई ए. पटेल, एल.ए. मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर (I.S.S.O., U.K.)

लेस्टर श्री स्वामिनारायण मंदिर में सर्वोपरि श्रीहरिकी कृपा तथा जीरागढ निवासी रोकडीया हनुमानजी की दिव्य प्रेरणा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से यहाँ अ.नि. गं.स्व. मोतीबहन जेरामभाई वस्राभाई के स्मरणार्थ उनके परिवार तरफ से दि. ३-१२-०५ शनिवार की सुबह ७ से १२-०० घंटे की अखंड श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून रखी गयी थी।

धून की पूर्णाहुति के पश्चात् मुख्य यजमान परिवारने श्री जनमंगल नामावली से श्रीहरि के चरणारविंद का पूजन किया था। सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद पत्र को पढा गया था। प्रमुख श्री जयंतीभाई पटेल ने प्रसंग अनुरुप माता-पिता की सेवा का महिमा समझाया था। थाल-आरती के पश्चात उपस्थित भक्तोने महाप्रसाद लिया था। *- मंत्रीश्री हेमराजभाई चोटलीया*

I.S.S.O. वोशिंग्टन डी.सी. चेप्टर

६ नवम्बर रविवार शामकी ३ घंटे चली सत्संग सभा में दर्शन-भजन, कीर्तन, वचनामृत वाचन थाळ-आरती-धून और नित्य नियम हरिभक्तों ने समूह में लिए थे। हरिभक्तों ने बडी संख्या में सभा में लाभ लिया था। नियमित रुप से सभा के आयोजन के लिए प.भ. कनुभाई पटेल और सभी हरिभक्तोको प.पू. महाराजश्रीने आशीर्वाद दिया था। *- कनुभाई पटेल*

नडोला झांबीया

यहाँ प.पू. महाराजश्रीका आशीर्वाद प्राप्त कर झांबीया-नडोला जोब के लिए गए श्री जयेशभाई को प.पू. महाराजश्री ने कहा था "वहाँ जाकर सत्संग रखना"। महाराजश्री विदेश जाने वाले प्रत्येक हरिभक्त तथा श्रद्धालुओ को यह शीख नियमित देते हैं। प.भ. जयेशभाई ने इस आज्ञा का अक्षरश) पालन किया है। और प.भ. प्रफुल्लभाई सोनी के घर शनिवार की शाम की सभा में दर्शन-कीर्तन का अचूक लाभ लेते है। इस प्रकार सभा का लाभ लेते है। जो प्रेरणा लेने जैसी है।

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

धमीज : श्री स्वामिनारायण मंदिर के को. प.भ. मनुभाई भलाभाई पटेल ता. १-१२-०५ के दिन श्रीजी महाराजका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

अहमदाबाद : प.भ. राजेन्द्रभाई वासुदेवभाई जोशी (एडवोकेट) ता. १९-१२-०५ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

साबरमती-अहमदाबाद : प.भ. नटवरभाई मफतलाल पटेल (उनावा) जिसके चि. प.भ. परागभाई (एम.बी.ए.) ता. २-११-०५ के दिन श्री नरनारायणदेव का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

बालासिनोर : प.भ. रविशंकर पूंजालाल काछिया ता. १६-१२-०५ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

चलोडा (धोलकादेश) : प.भ. कमलाबहन पूंजाभाई ता. १९-१२-०५ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

अहमदाबाद (वर्तमान मे लंदन) : प.भ. विष्णुप्रसाद भीखाभाई ब्रह्मभट्ट (प.भ. धीरुभाई ब्रह्मभट्ट के छोटेभाई) ता. ५-१२-०५ के दिन श्रीजी महाराजका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

अहमदाबाद : प.भ. सोनी मधुकान्ताबहन भीखालाल ता. ५-१२-०५ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के सांनिध्यमें तथा
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आश्रय में गढपुर की सांख्ययोगी
मेघना बहन गुरुकानबाई द्वारा आयोजित कथा पारायण के विविध प्रसंग ।



श्रीहरियाग के पूर्णाहुति की पूजा विधि करते हुए प.पू.ध.धु.
आचार्य महाराजश्री ।



कथाश्रवण करते हुए श्रीहरि के दोनो अपर स्वस्त्र ।



यजमान परिवार के चि. दीप प.पू. लालजी महाराजश्री का
आशीर्वाद प्राप्त करते हुए ।



कथाश्रवण करती हुई देश-विदेश के मंदिरो की सांख्ययोगी
बहने ।





यजमान परिवार मावजीभाई, अरविंदभाई, विश्रामभाई तथा वीरचंदभाई एवं बहने पोथीयात्रा में ।



लोस एंजलस श्री स्वामिनारायण मंदिरमें दर्शन देते हुए श्री राधाकृष्णदेव श्रीहरिकृष्ण महाराज ।



लोस एंजलस मंदिर में पांचवे पाटोत्सव प्रसंग पर पधारे हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री सभा में दर्शन देते हुए ।



दंढाव्य प्रदेश के वडु में १५० वर्ष पूर्व श्रीहरि समकालीन स.गु. ब्र. स्वा. वासुदेवानन्दजी द्वारा प्रतिष्ठिति श्री हनुमानजीकी मंदिर की पुनःनिर्माण होने के बाद प्रतिष्ठा विधि करके आरती उतारते हुए प.पू. महाराजश्री ।



वडु श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनो के) पाटोत्सव प्रसंग पर आरती उतारते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



वडु में यज्ञ विधि करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



वडु मंदिर की सभा में दर्शन देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।

Praful Kharsani